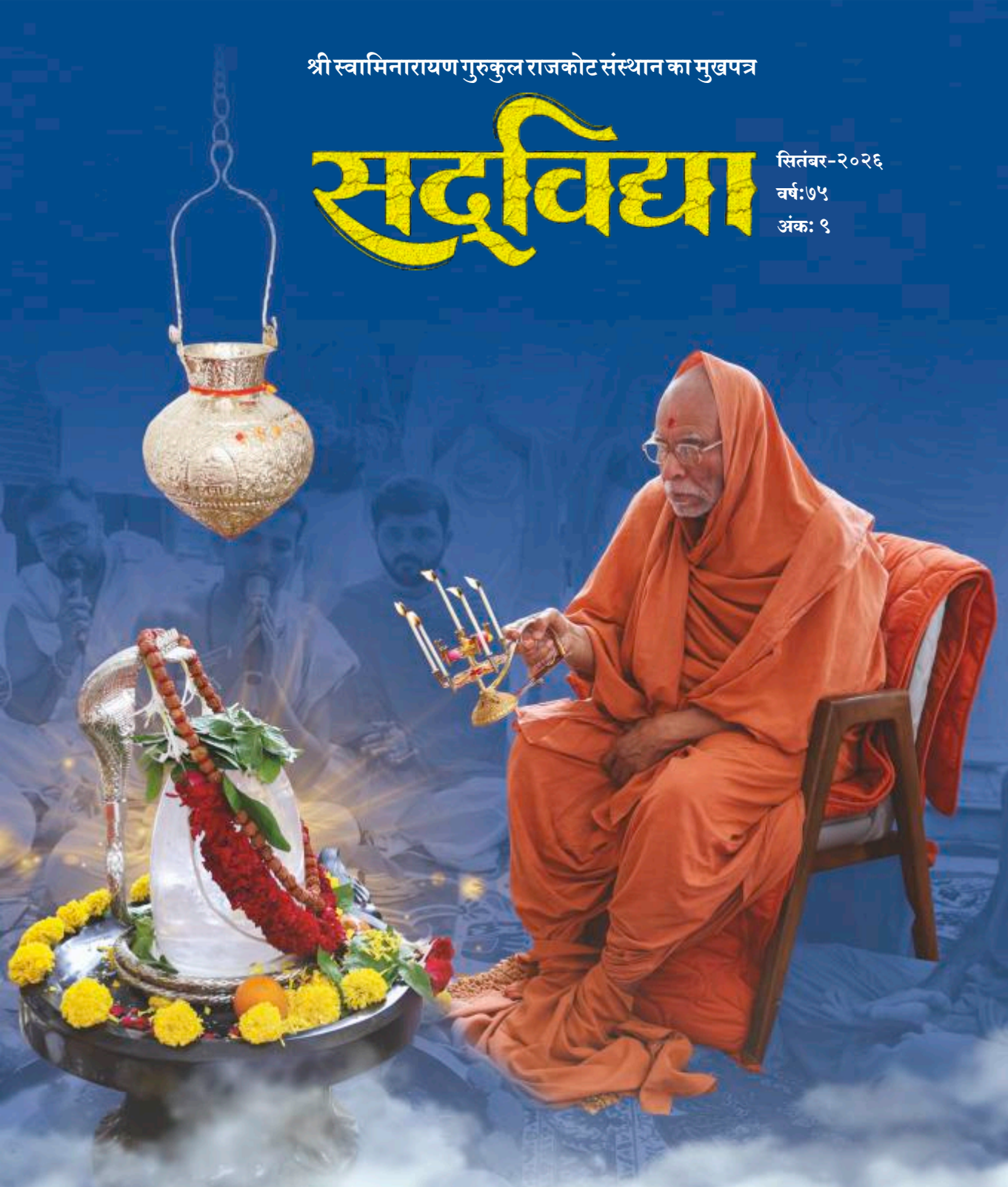
श्री स्वामिनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान का मुखपत्र

सद्विद्या

सितंबर-२०२६
वर्ष:७५
अंक: ९



श्री स्वामिनारायण गुरुकुल निकोल (अमदावाद) के आँगन में संवत् २०८२ सावन शुक्ल अष्टमी को नूतन मंदिर में

स्फटिकमणि के शिवलिंग श्री सिद्धेश्वर महादेव की प्रतिष्ठाविधि

आरती उतारते पूज्यपाद गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी एवम् उमरेठ के भूदेव और संत-भक्तजन


१


२


३


४

१-२-३. राजकोट: गुरुकुल में गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवम् विंशति पाटोत्सव के प्रसंग पर श्रीघनश्याम महाराज का अभिषेक कर रहे पूज्य महंत श्री देवप्रसाददासजी स्वामी और पुराणी श्री धर्मवल्लभदासजी स्वामी एवम् अभिषेक आरती उतारते पूज्य गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी, यजमान भक्तजन तथा दर्शन कर रहे संत-भक्तजन

४. डलास (अमरिका): गुरुकुल में आठवें पाटोत्सव के साथ आयोजित आठवें ब्रह्मसत्र के प्रसंग पर श्रीघनश्याम महाराज एवम् देवों के सान्निध्य में पूज्यपाद महंतस्वामी आदि संतगण और अमरिका के अलग-अलग केंद्र, शहरों एवम् कनाडा, लंदन, भारत आदि देशों से ब्रह्मसत्र का लाभ लेने पधारे कार्यकर्ता भक्तजन एवम् बाल-युवक मंडल के सदस्य

॥ प्रवर्तनीया शद्विद्या भुवि यत्युकृतं महत् ॥



सद्गुरु शास्त्रीजी महाराज श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी संस्थापित
श्री स्वामिनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान का मुखपत्र

सद्विद्या

वर्ष: ७५, अंक: ९, सितंबर - २०२६,
सावन-भाद्रपद, संवत् २०८२

अनुक्रमणिका

पूजा-ध्यान में विवेक	:	शास्त्रीजी महाराज की कथा से...	४
गुरुमहाराज के हृदय की बात	:	संकलित	५
भगवान के निश्चय की महिमा	:	सद्गुरु श्री देवप्रसाददासजी स्वामी	६
ऐसे संत को नमाऊँ मैं शीश	:	साधु शांतिप्रियदासजी स्वामी	८
प.भ. श्री पानाचंदभाई गांधी	:	पूज्य प्रभुचरणदासजी स्वामी	१२
क्रियासिद्धि का रहस्य	:	रमणीकभाई रूपारेलिया	१६
गुरुवंदना	:	साधु श्री मूर्तिस्वरूपदासजी स्वामी	१८
संस्था समाचार	:	संकलित	१९

प्रकाशक	:	श्री स्वामिनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान
आद्यसंपादक	:	श्री त्रिभुवनभाई गौरीशंकर व्यास
संपादक	:	साधु रसिकवल्लभदासजी स्वामी
सहसंपादक	:	भगवानजीभाई कोटक
संकलन	:	श्री जयंतिभाई ठुम्मर, निवृत्त हिन्दी शिक्षक
कलासंयोजक	:	लक्ष्मीनारायण साहित्य कला
सहायक	:	श्री अश्विन वाघाणी

शुल्क देश में	शुल्क विदेश में
१० साल: ₹ १०००/-	१ साल: $ २०/-
५ साल: ₹ ५००/-	५ साल: $ ९०/-
१ साल: ₹ १००/-	

प्रकाशन और पत्र व्यवहार संपर्क

सद्विद्या कार्यालय

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल, ढेबर रोड, राजकोट-२

✆ ९९२५५ ००२५३ ✆ ९९७९८ ५९८७१

sadvidya@sgrs.org

How Can they live?

१९७८ में गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज अमरिका की सत्संगयात्रा पर पधारे थे तब न्यूजर्सी में एक हरिभक्त के यहाँ संतगण का ठहराव था। मकान के सामने एक माध्यमिक स्कूल थी। पू. गुरुदेव के साथ श्री लक्ष्मीनारायणदासजी स्वामी आदि शिक्षक संत भी थे इसलिए भक्तों ने स्कूल की मुलाकात की व्यवस्था की। संत स्कूल में पधारे तो स्कूल के प्राध्यापक और संचालकों ने स्वागत किया। स्कूल का निरीक्षण करते हुए संत एक कक्षा में गए तब अमरिकन बच्चे संतगण को देखकर आनंदित हुए। भक्तों ने उन बच्चों को अंग्रेजी में संतगण का परिचय कराया कि भगवा वस्त्रधारी ये पादरी हिंदू प्रीस्ट हैं। वे स्त्री-धन के त्यागी हैं यानि वे पैसे को छूते नहीं हैं और स्त्रियों से अष्ट प्रकार से दूर रहते हैं। यह सुनकर दो-तीन जिज्ञासु विद्यार्थी बोल उठे, Oh! How can they live? We do not believe and understand that. संतगण उनकी निखालसता देखकर हल्के से हँसते हुए आगे निकल गए।

ऐसा ही एक प्रसंग ईरी शहर में हुआ था। इसी यात्रा में कांतिभाई पटेल आदि भक्तों के आग्रह से स्वामी इरी पधारे थे। भक्तों ने वहाँ के कॉलेज के हॉल में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की थी। सभा में शहर के मेयर लुईस जे. टुलियो भी पत्नी के साथ पधारे थे। दंपती आये तब भक्तों ने उनकी पत्नी को संत के नियम और मर्यादा समझाई। दंपती ने आश्चर्य के साथ पूछा, "Oh, really! How can they live?

संतगणों की निर्मल जीवनरीति और भेदभावरहित मर्यादा से उन्हें बहुत भाव हुआ। मैडम ने दूर से संतगण को वंदन किया और महिलाओं की सभा में बैठीं। मेयर साहब स्वामी से मिलकर प्रसन्न और प्रभावित हुए। मेयर साहब की विनती से दूसरे दिन पूज्य स्वामी और संतगण ने उनके ऑफिस में पधारे की। वहाँ 'की ऑफ इरी' का सम्मान अर्पण करके उन्होंने पूज्य स्वामी का सत्कार किया और उन्हें अपनी कुर्सी पर बिठाये।

कलिकाल में विचरण करने वाले ऐसे पवित्र संत के लिए भगवान वेदव्यास कहते हैं, 'कनक कांता सूत्रेण वेष्टितं सकलं जगत्; तासु तेषु विरक्तेषु द्विभुजो परमेश्वरः'

स्त्री और धन का त्याग करना दुष्कर है। भगवान की सच्ची चाह वाले साधक इन दोनों का त्याग करके नियमपालन के साथ भजनभक्ति करते देखने को मिलते हैं; परंतु अंतर में इन दोनों के प्रति अरुचि रखने वाले संत को दो भुजाओं वाले परमेश्वर कहा गया है।

-संपादक

पूजा-ध्यान में विवेक

(गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की कथा से संकलित)



गढ़डा प्रथम के प्रथम वचनामृत में ध्यान में आवरण करे उसको माया समझना, इस विषय में स्वामी भक्तों को उद्देश्य करके कहते हैं...

जगत में बहुत से ऐसे भक्त होते हैं जो अच्छे भक्त कहलाते हैं। वे पूजा करने बैठें तो अपने पोते को भी साथ बिठाते हैं। फिर हमें सुनाते हैं स्वामी, लड़का बहुत अच्छा है हो! मैं पूजा करने बैठूँ न, तो साथ में वह भी माला लेकर बैठ जाता है। लड़का बहुत समझदार!

हम हाँ, जी!... हाँ, जी!... करते हैं। मन में जानते हैं कि, इसको लड़के में वासना है।

भगवान की पूजा के समय उसको बगल में बिठाते हैं। तो क्या बापा को भगवान याद आते होंगे? थोड़ी देर हो तो उसकी ओर देखते हैं और सिखाते हैं ले, ऐसे फेर...ले, ऐसे फेर!

अब तू ही भगवान को भूल गया, तो उसको कहाँ समज आयेगा, मेरे बाप!

पूजा-पाठ करते... हमें भी उसमें बहुत से ऐसे दिखाई देते हैं। बूढ़े हो गए हो! हम पूजा कर रहे हों, कोई मानसीपूजा कर रहा हो तो भी सीधा पैर छूने आ जाते हैं और कहते हैं स्वामी, जय स्वामिनारायण!

एक तो मुश्किल से हमने भगवान में वृत्ति रखी हो, वहाँ यह हमें झकझोरे, मेरे मुँह की ओर देखो.. कहो लो।

और वह स्वयम् फिर अच्छा भक्त कहलाता है! जो दूसरों को भगवान भुलाए, वह अच्छा हरिभक्त, लो!

विचार करना, सुनना हो, अभी भी इन पुराने हरिभक्तों को भी इस विवेक की खबर नहीं है! कोई पूजा कर रहा हो, कोई ध्यान कर रहा हो, कोई माला फेर रहा हो और बराबर लीन हो, उसके पास नहीं जाना चाहिए। उसको नमस्कार करना हो तो दूर से नमस्कार करना चाहिए। उन साधु को भले ही खबर न हो कि आपने नमस्कार किया पर भगवान जानते हैं कि इसने नमस्कार किया।

जबकि मुश्किल से उन साधु की भगवान में वृत्ति रही हो, वहाँ यह मूर्ख आकर कहता है, जय स्वामिनारायण! एक तो उसका मुश्किल से मन स्थिर हुआ हो वह फिर आगे-पीछे हो जाता है हो!

तो समझदार-समझदार हरिभक्तों को ऐसी बहुत आदत होती है हो! वे पास आकर छूकर ही नमस्कार करते हैं और वो भी जब भजन करने बैठे हों उसी समय!

भाई, यूँ ही फालतु बैठे हों तब पास आइए न, उसे कौन मना करता है? पर उसने मुश्किल से भगवान में वृत्ति जोड़ी हो, वहाँ ये लोग उसको तोड देते हैं!

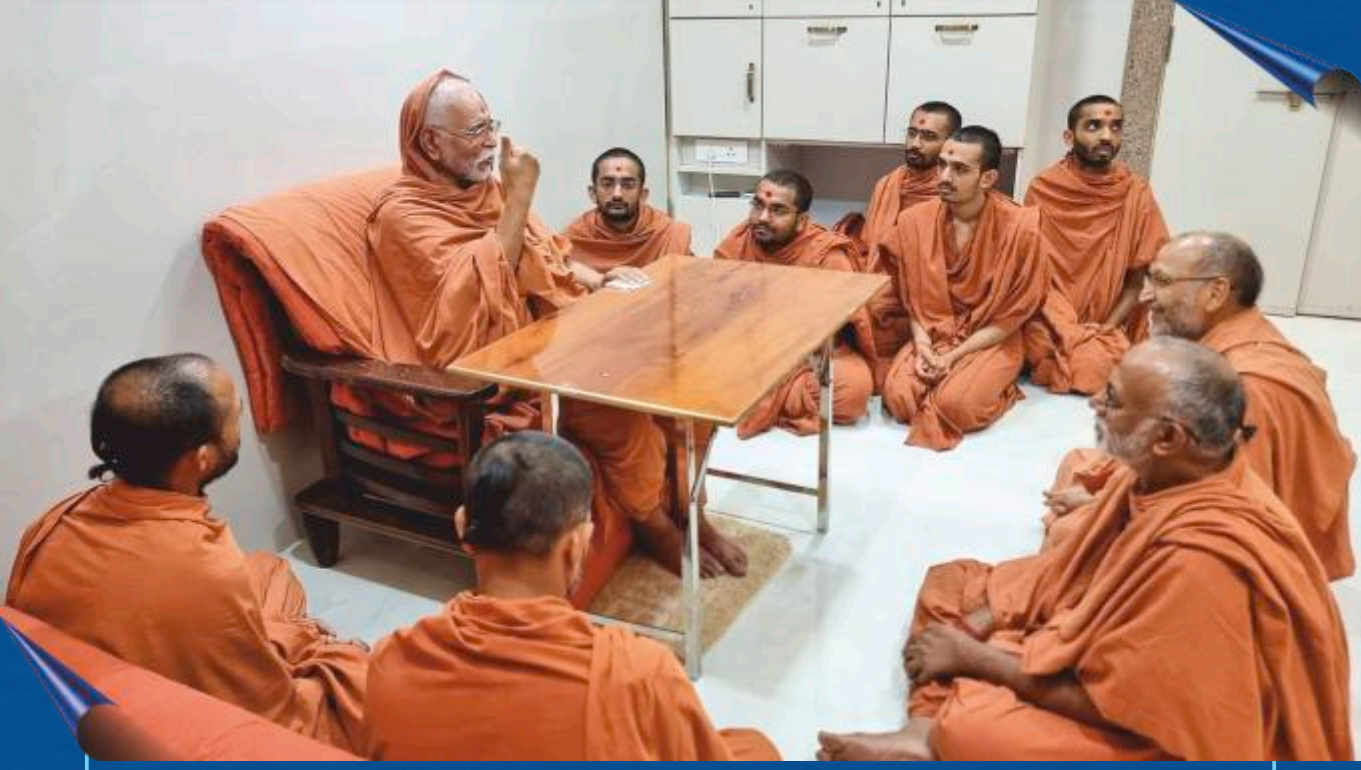
हम पूजा कर रहे हों तब पास आकर जोर से कहते हैं स्वामी, जय स्वामिनारायण! तो हम न बोलें तो फिर हमारे मुँह के पास अपना मुँह लाकर बोलते हैं हो! पर वह बोले बिना नहीं रहता, वह जानता है कि मैं आया हूँ! उसकी खबर पड़नी चाहिए। अपनी घोषणा करने के लिए मेहनत करता है! उसने जो भगवान में वृत्ति जोड़ी है, वह टूटती है; यह खबर नहीं पड़ती!

इस भजन करने में भी बहुत विवेक रखना चाहिए!

श्रीजीमहाराज ने अनंत काल तक अनंत जीवों को भगवान के स्वरूप में जोड़ने के लिए यह पहला वचनामृत कह रखा है हो!

कथा उपदेश

- जब कोई संत या हरिभक्त पूजा, माला या ध्यान में लीन हो तब उन्हें खलल नहीं पहुँचाना चाहिए।
- पूजा करते समय हमारा ध्यान पूजा में ही रखना चाहिए। छोटे बच्चों को पूजा अन्य समय पर सिखानी चाहिए।
- ध्यान-भजन कर रहे संत-भक्तजन को बीच में से `जय स्वामिनारायण` करने में स्वयम् को दिखाने का अहंकार रहा होता है।
- ध्यान-भजन-पूजा कर रहे संत को दूर से नमस्कार कर लेने चाहिए। भगवान अंतर्यामी हैं, वे हमारे भाव को जानते ही हैं।



गुरुमहाराज के हृदय की बात

''पूरी जिंदगी किसी से मांगना नहीं'', ऐसा व्रत लेना।

नवंबर २३, २०२४ (शनिवार)

वाशी, मुंबइ

पूज्य गुरुमहाराज वाशी गुरुकुल के विंशति महोत्सव में पधारे थे। सुबह पूजा करने के बाद पूज्य स्वामी संत आश्रम में सोफे पर आकर बैठे। संतजन दर्शन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। स्वामी आए तो दंडवत प्रणाम करके संतगण नज़दीक में बैठने लगे। दस संत स्वामी के आसपास बैठ गए।

स्वामी ने संतगण से पूछा, चांद्रायण और पाराक व्रत से भी बड़ा व्रत कौन-सा ? प्रश्न सुनकर संत एक-दूसरे की ओर देखने लगे। किसी को उत्तर नहीं सूझा।

तो स्वामी ने ही उत्तर दिया, किसी से मांगना नहीं, यह सबसे बड़ा व्रत !

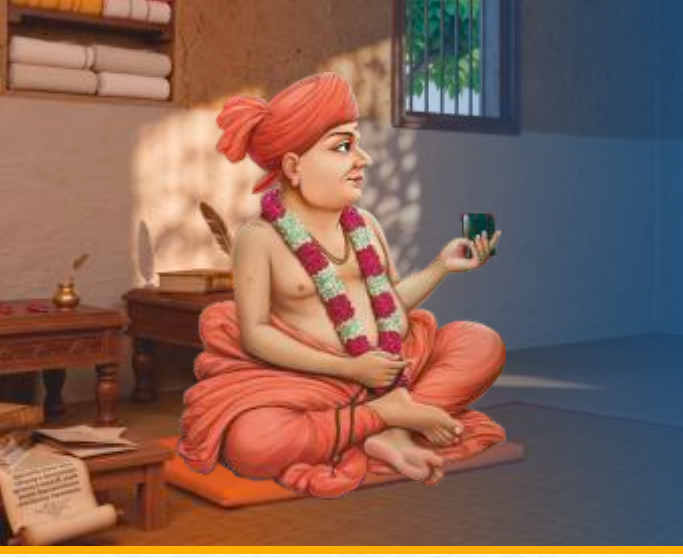
स्वामी आगे कहते हैं, इस समय तो साधुलोग ऐसा महसूस करने लगते है कि, यह भगवा, सिर्फ मांगनेके लिए ही लिया हो। इसलिए पूरी जिंदगी किसी से मांगना नहीं चाहिए। ऐसा व्रत लेना।

हम मांगते नहीं तब तक हमारी वाणी मंगल है और जब से मांगेंगे तब से हमारा श्रीपतिं श्रीधरं हो जाएगा। जब तक मांगते नहीं, तब तक हमारी प्रगति होती रहेगी, और मांगने लगेंगे तो प्रगति रुक जाएगी।

अनंतस्वरूप स्वामी ने स्वामी से पूछा, स्वामी ! पूरी जिंदगी मांगना नहीं, ऐसा अनुसंधान किस तरह रखना ?

स्वामी कहते हैं, यह भगवा भगवान को प्राप्त करने के लिए लिया है, मांगने के लिए नहीं। इतना याद रखें तो हम भिक्षुक नहीं बनेंगे।

इस तरह बात करके पूज्य स्वामी ने संतगण की वृत्ति में भगवान प्रधान रहें, पर धन प्रधान न हो जाए, ऐसी सीख दी।



भगवान के निश्चय की महिमा

सद्गुरु श्री देवप्रसाददासजी स्वामी

और कारियाणी का सातवाँ वचनामृत पढ़वाकर बात की कि जो निश्चय है वही आत्यंतिक कल्याण है और निश्चय है वही सिद्ध दशा है और देखने का कहा है वह भी ज्ञान सहित जानना उसी को कहते हैं और उसके बिना तो दिखाई देता है फिर भी न्यून है और विषय को झूठ करना यह तो सांख्य समझना और 'एक भगवान भासीत हो' कहा है वह भी निर्विकल्प निश्चय रूप से भासित होता है। (१/३०९)

विवेचन: स्वामी ने कारियाणी का सातवाँ वचनामृत पढ़वाकर उसे समझाते हुए बात की। इस वचनामृत में श्रीजीमहाराज ने परमहंसों से प्रश्न पूछा है कि 'आत्यंतिक कल्याण किसे कहें और आत्यंतिक कल्याण को पाकर जो सिद्ध दशा को प्राप्त हुआ हो उस पुरुष की सभी क्रियाओं में कैसी स्थिति बर्तती हो?'

ऐसा प्रश्न परमहंसों से पूछा है और उसका उत्तर भी स्वयम् ही दिया है। महाराज के उत्तर का सार ऐसा है कि आत्यंतिक प्रलय के अंत में अक्षरधाम में जो मूर्तिरूप से श्रीजीमहाराज विराजते हैं वही महाराज मनुष्यरूप होकर पृथ्वी पर प्रगटरूप से विचरण करते है। तब उस स्वरूप की आत्यंतिक पहचान हो और मैं उस परमात्मा का दास हूँ सेवक हूँ और वे मेरे मालिक हैं, मेरे इष्टदेव हैं। ऐसा अपने जीव में आत्यंतिक निश्चय होना, उसी को स्वामी आत्यंतिक कल्याण बताते हैं और श्रीजीमहाराज भी वही वस्तु वचनामृत में बता रहे हैं। शब्द शायद थोड़े अलग हो सकते हैं, पर दोनों का भाव एक समान है। संपूर्ण पहचान हुए बिना संपूर्ण निश्चय शक्य नहीं बनता।

वास्तव में तो आत्यंतिक कल्याण अर्थात् आत्यंतिक प्राप्ति तो अक्षरधाम में जाकर महाराज की प्राप्ति हो अर्थात् महाराज की सेवा की प्राप्ति हो, उसे सांप्रदायिक भाषा में आत्यंतिक कल्याण को प्राप्त हुआ माना जाता है; परंतु बीज-वृक्ष न्याय से यदि सच्ची पहचानपूर्वक महाराज का निश्चय ही न हो तो वह प्राप्ति मुमकिन नहीं होती। स्वामी कहते हैं, कि आत्यंतिक निश्चय, वही आत्यंतिक कल्याण है। इसलिए हमें चिंता यह होगी की, वह प्राप्ति होगी या नहीं? ऐसी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है; परंतु हमें महाराज का आत्यंतिक निश्चय है या नहीं? हुआ है या नहीं हुआ? और आत्यंतिक निश्चय किसे कहा जाए? उसकी चिंता करने की आवश्यकता है। निश्चय हुआ है वह कैसा गहन है, जीव में हुआ है या नहीं? यह जाँचने की आवश्यकता है।

वचनामृत में महाराज ने बताया कि आत्यंतिक कल्याण को पाकर जो सिद्ध दशा को प्राप्त होता है वह सिद्ध दशा कौन सी? तो स्थावर-जंगम सभी आकारों में जहाँ-जहाँ दृष्टि जाए वहाँ-वहाँ महाराज की मूर्ति को साक्षात् देखता है और उस मूर्ति के बिना दूसरा अणु मात्र भासित न हो, यह सिद्धदशा का लक्षण है। उसमें भी स्वामी कहते हैं कि जो देखने का कहा है वह भी ज्ञान सहित 'यह वह तत्त्व है' ऐसे भाव से देखने को कहा है। केवल प्राकृतभाव से हमारे मस्तिष्क में कोई पदार्थ घुस गया हो, उस तरह कोई अखंड देखे तो भी उसे अधिक फायदा नहीं होता।

श्रीजीमहाराज जूनागढ़ गोकळ भाटिया के घर पधारे। उनकी

माताश्री को सत्संग नहीं था। उन्हें ऊपर से महाराज का अभाव-एलर्जी थी इसलिए बहुत ही विरोधी थीं; परंतु पुत्र गोकळभाई परम भक्त और शूरवीर थे। इसलिए माँ के विरोध के बावजूद महाराज की पधरावनी करवाई। उनकी माता को मन में विरोध होते हुए भी उत्सुकता तो थी ही कि स्वामिनारायण कैसे हैं? यह देखने जाते समय महाराज की दृष्टि उन पर पड़ी और बुढ़िया की नजर एक होते ही उन्हें महाराज की मूर्ति सब जगह दिखाई देने लगी। तब वह बाई अत्यंत परेशान हो गईं और मूर्ति को भूलने के लिए अनेक प्रयत्न करने लगीं। इस प्रकार अखंड मूर्ति दिखाई देने का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए स्वामी कहते हैं देखना वह भी ज्ञान सहित कहा है-सच्ची पहचानपूर्वक कहा है। यह मूर्ति दिखाई देती है, वह कौन है? उसकी क्या महिमा है? उसकी दुर्लभता कितनी है? उसके सहित देखने को बताया है, अर्थात् निश्चयपूर्वक देखने को बताया है। निश्चय संपूर्ण रूप से सिद्ध हो, उसी को सिद्ध दशा बताई है; परंतु चमत्कार जीवन में आएँ और वैसी सिद्ध दशा न आए तो वैसी सिद्ध दशा कल्याण के मार्ग में काम नहीं आती।

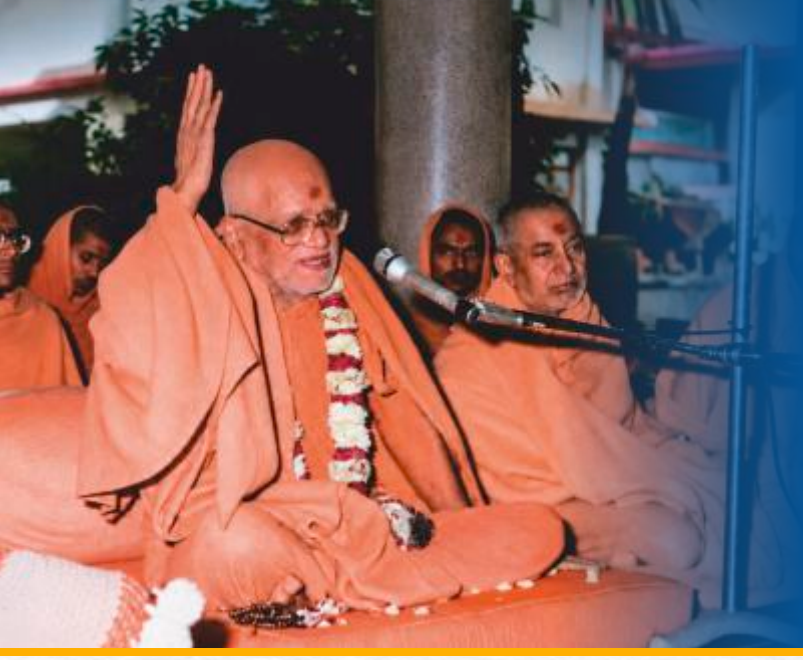
फिर स्वामी कहते हैं निश्चय करना वह भी जगत-विषयों को झूठा करके करना है। वचनामृत में महाराज ने इशारा किया कि आत्यंतिक प्रलय के अंत में जो मूर्ति अक्षरधाम में रहती है, उसका सीधा अर्थ ऐसा हुआ कि तमाम प्रकार के विषयों को झूठा करके निश्चय करे तभी आत्यंतिक कल्याण को प्राप्त होता है और सिद्ध दशा आती है। उन विषयों को झूठा करने के लिए तो स्वामी कहते हैं कि सांख्य को समझना। यदि सांख्यशास्त्र का सच्चा गलितार्थ जीवन में जनकराजा की भाँति आए तो विषय झूठे हो जाएँ और महाराज का वास्तविक पक्का निश्चय हो और जीव आत्यंतिक कल्याण को पाकर सिद्ध दशा को प्राप्त होता है।

और अक्षरधाम में सुख कैसे है? तो जैसे राजा का लड़का चाहे, जैसे घूमता-फिरता रहे, पर राज्य का मालिक वही है। ऐसे सुख है और कुछ मुक्त तो निर्विकल्परूप से जुड़े रहे हैं और कुछ मुक्त तो बातें, महिमा कहते हैं और सुनते हैं जैसे यहाँ है वैसे ही वहाँ है, उसमें जरा भी अलग नहीं है। (स्वामी की वातो-१/३०६)

विवेचन: अक्षरधाम में कैसे सुख है? प्रश्न का तात्पर्य यह है कि अक्षरधाम का सुख कैसे प्राप्त होता है? किस साधु का संग करने से ऐसा भाव आता है, यह प्रश्न है। स्वामी कहते हैं जैसे राजा का लड़का चाहे जैसे घूमता-फिरता रहे पर राज्य का मालिक है, ऐसे सुख है अर्थात् राजगद्दी का सुख तो राजा के घर कुँवर ने जब से जन्म लिया तब से उनके खाते में लिखा गया है। राजा के घर बेटा होकर आया है, राजा के साथ अटूट संबंध हुआ है इसलिए वह राजगद्दी का मालिक हो चुका है। राजकुँवर को गद्दी का सुख किसी सद्गुणों की साधना के आधार पर प्राप्त नहीं होता पर राजा के या पिता-पुत्र के संबंध से प्राप्त होता है। शायद संबंध के बिना दूसरा कोई चाहे जितना गुणवान या तप-त्याग-साधनावाला हो तो भी राजगद्दी के सुख को नहीं पा सकता। स्वामी कहते हैं इस लोक में ऐसी रीति है वैसे ही मोक्ष के मार्ग में अक्षरधाम का सुख पाने के लिए भी महाराज के संबंध से वह सुख पाया जा सकता है पर तप, त्याग, वैराग्य के बल से अक्षरधाम के सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। महाराज के आश्रय-रूप संबंध को प्राप्त करे उससे वह अक्षरधाम के सुख का अधिकारी बनता है। राजा का कुँवर गरीब के लड़के की तुलना में कभी कम बुद्धिमान हो, आलसी हो, आवारा हो पर उम्रलायक हो तो राजतिलक तो उसी का किया जाता है, दूसरे गुणवान को खोजने नहीं जाते, वैसे ही महाराज के अक्षरधाम का सुख है वह महाराज के संबंध से ही प्राप्त होता है। महाराज के संबंध को पाकर फिर वह निर्विकल्परूप से जुड़ा रहे, बातें महाराज की कहे या महाराज की महिमा कहे पर वह महाराज की मूर्ति के सुख का अधिकारी बन जाता है, उसके बिना तो ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी हो, तीव्र वैराग्य हो, ब्रह्मभाव को प्राप्त हो गया हो पर एक आश्रय न हो तो अक्षर के सुख की प्राप्ति न हो, इसमें जरा भी फर्क नहीं है।

पूज्यपाद महंत स्वामी श्री देवप्रसाददासजी स्वामी की
अमृतसभर कथा का लाभ लेकर भगवान के
मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु, हम प्रतिदिन सुबह
अवश्य इसका लाभ लें।





भक्तचिंतामणी द्वितीय प्रकरण अंतर्गत
गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज के जीवनप्रसंग

ऐसे संत को नमाऊँ मैं शीश

लेखांक–११

साधु शांतिप्रियदासजी स्वामी

संशयहर्ता व कल्याणकर्ता, और वेद पुराण के वेत्ता;
कोमल वाणी वाचाल विशेष, ऐसे संत को नमाऊँ मैं शीश।१८

संशयहर्ता

सच्चे संत का एक लक्षण यह है कि उस के सान्निध्य में जीव के अंतर के संशय दूर हो जाते हैं। उपनिषद् कहता है 'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः' हृदय की अज्ञानरूप ग्रंथियाँ टूट जाती हैं और सर्व संशय का छेदन हो जाता हैं।

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ऐसे संशयहर्ता संत थे कि उनके पास कोई जिज्ञासु संत या भक्त प्रश्न लेकर आए तब अनेक प्रकार की दुविधा हो, पर स्वामी से उत्तर मिले तब उन्हें केवल उत्तर ही न मिला हो, उस प्रश्न का स्पष्ट निराकरण हो गया हो।

संशयकर्ता कौन बन सकता है? तो जो वेद-पुराण के वेत्ता हों, शास्त्रों के मर्म को समझ सकें वही सच्चे अर्थ में संशयहर्ता बन सकते हैं; क्योंकि ऐसे मर्मज्ञ संत ही सर्व शास्त्रवचनों का समन्वय करके जीव के हृदय में रहे संशयों को मूल से उखाड़ सकते हैं और देशकालानुसार योग्य निर्णय ले सकते हैं। इसीलिए शास्त्र मर्मज्ञ सद्गुरु के लिए वेदांतग्रंथों में 'श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्' और 'शाब्दे परे च निष्णातम्' जैसे वचन प्रयुक्त हुए हैं।

प्रतिदिन शाम को अपने आसन पर होने वाली वचनामृत की कथा हो या रविवार की सत्संग सभा या फिर ब्रह्मसत्र की ब्रह्मसभा; गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की वाणी का प्रवाह अस्खलित बहता था। वचनामृत से लेकर उपनिषद् के मंत्रों के अर्थों को पूज्य स्वामी समझा रहे हों तब श्रोताओं के हृदय के आध्यात्मिक और व्यावहारिक प्रत्येक प्रश्न के उत्तर पूछे बिना ही मिल जाते थे।

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज १९८१ में अमरिका की दूसरी सत्संगयात्रा पर पधारे थे तब का एक प्रसंग है। स्वामी का विचरण न्यूजर्सी में था तब साउथ जर्सी में स्थित हिंदू टेम्पल के प्रमुख श्री अरुणभाई आदि अगुआ भाइयों ने सार्वजनिक सत्संग सभा का आयोजन किया था। यह वह समय था जब अमरिका में साधु-संत बहुत कम आते थे। उसमें भी स्वामिनारायण संप्रदाय के संत तो बहुत ही कम आते थे। स्वामीजी के सत्संग का लाभ लेने इस सभा में आए अधिकांश भाविक स्वामिनारायणीय संतगण से और संप्रदाय से अनजान थे।

संप्रदाय से परिचित न हों तो लोगों के मन में भगवान स्वामिनारायण और संप्रदाय के विषय में अलग-अलग प्रकार के संशय हों यह स्वाभाविक है। इसलिए कुछ जिज्ञासुओं ने मंदिर के कार्यकर्ताओं के समक्ष बात रखी थी कि हमें अपने अध्यात्म और संप्रदाय संबंधी प्रश्न स्वामीजी से पूछने हैं, तो अरुणभाई ने तय किया था कि सभा के अंत में स्वामी से प्रश्न पूछेंगे।

सभा शुरू हुई। धून-कीर्तन और अन्य संतगण के प्रारंभिक प्रवचनों के बाद पूज्य स्वामी ने कथावार्ता की। स्वामी ने गीता, उपनिषद् के श्लोक उद्धृत करके अमरिका में पैसे कमाने के साथ अपने हिंदू धर्म की मर्यादाओं को दृढ़ रखने की और सदाचार के पालन के साथ जीवन उत्कर्ष की सुंदर बातें कीं। स्वामिनारायण भगवान, संप्रदाय और संस्था का भी संक्षेप में परिचय दिया गया। ८० साल की उम्र में अस्खलित प्रवाह में स्वामी के मुख से धर्म और

सदाचार की बातें सुनकर सबके स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में सर्व संशय दूर हो गए!

कथा के बाद भाविक भक्तों के हृदय में स्वामी के प्रति जो अहोभाव जाग़ृत हुवा, उसे अरुणभाई ने अपने प्रवचन में अभिव्यक्त किया कि, स्वामीजी, आपके जैसे परम पवित्र संतगुण से संपन्न संत की बातें सुनकर हमारे मन में छोटे-बड़े बहुत से प्रश्न थे वे सब हल हो गए हैं। साथ ही स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में भी हमारे मन में बहुत सी गलत धारणाएँ थीं, परंतु आज आपके सत्संग से हमारे उन संशयों के बादल भी बिखर गए हैं। आप जब भी अमरिका पधारें तब हमारे मंदिर में सत्संग का लाभ देने अवश्य पधारें।



कल्याणकर्ता

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने अपने जीवन में अखंडधून, जपयज्ञ, सत्संग शिबिर, यात्राट्रेनें, आरोग्यसेवा, सामाजिक सेवा, महा महोत्सव जैसे अनेकविध सर्वजीव हितावह कार्य करके उनके द्वारा लाखों जीवों को श्रीजीमहाराज के शरण में लेकर उन्हें आत्मकल्याण के मार्ग पर मोड़ा है और गुरुकुल की स्थापना करके तो स्वामी कल्याण का साक्षात् सदाव्रत शुरू करके अनंत जीवों के कल्याणकर्ता बने हुए हैं।

अपने में स्नेह रखने वाला कोई भक्त भूल से भी कल्याण का मार्ग चूक जाए तो स्वामी उसकी संभाल रखते थे। उसके अनेक प्रसंग स्वामी के जीवन में हुए हैं। उनमें से अमरेली के पास के माळीला गाँव के अरजणभाई परमार का एक प्रसंग है।

कुम्हार जाति के अरजणभाई पूज्य शास्त्रीजी महाराज के योग से बहुत अच्छे सत्संगी बने थे। उनकी समझ और भक्ति गाँव के अन्य भक्तों के लिए भी प्रेरणारूप थी। अरजण भगत का निर्मल, निखालस और मिलनसार जीवन था, इसलिए परिवारजनों को उनके प्रति बहुत ही पूज्यभाव था। उम्र वृद्ध हुई तब बेटे बहुत अच्छी सेवा करते थे। उसमें भी उनकी पुत्रवधू को दादा के प्रति बहुत महिमाभाव। बेटी की तरह दौड़-दौड़कर सेवा करती थी। उनकी सेवा से भगत भी उन पर खुश। भगत का अंतकाल आया तब संतगण के साथ श्रीजीमहाराज अपने बिरुद के अनुसार लेने पधारे। देह छोड़कर भगवान के धाम में जाते समय भगत को बेटी जैसी पुत्रवधू याद आई। उसमें मन रह गया तो महाराज धाम में नहीं ले गए। भगवान के सच्चे भक्त को जन्म-मरण या लक्षचौरासी में तो न जाना पड़े और सूक्ष्म वासना के कारण भगवान धाम में नहीं ले गए तो उन्हें प्रेत का शरीर मिला।

फिर वे अपने भाई के शरीर में बार-बार आते रहते थे। जब प्रेत का प्रवेश होता तब भाई के शरीर का रंग बदल जाता और रोते रहते। कोई पूछे कि, तुम कौन हो? तो कुछ उत्तर न दें। इतना बोलें कि, मैं बहुत दुःखी हूँ। मुझे राजकोट शास्त्रीजी महाराज के पास ले जाओ।

बापा महाराज के एकांतिक भक्त थे इसलिए परिवार के या गाँव के लोगों को ऐसी शंका तो होती ही नहीं कि ये अरजणबापा होंगे। इसी उधेड़बुन में कुछ दिन बीते। फिर तो दिन में दो-तीन बार प्रवेश करके कहते कि, मैं कहता हूँ वैसा तुममें से कोई क्यों नहीं करता? मुझे राजकोट शास्त्रीजी महाराज के पास ले जाओ न! फिर परिवार के सदस्य उन्हें राजकोट लाए। तब गुरुकुल का प्रारंभकाल था। अभी मकानों का निर्माणकार्य चल रहा था। संतगण दाणापीठ में पुराना मंदिर था वहाँ रहते थे। इस समय गुरुकुल में चापाकल लगाना था उसकी पाइप लाइन किफायती भाव में खरीदने के लिए स्वामी भावनगर गए थे। यहाँ मंदिर में पूज्य कोठारी स्वामी और दूसरे एक-दो संत थे।

परिवारजनों ने कोठारी स्वामी को सारी हकीकत बताई। तो उन्होंने कहा स्वामी तो इस समय बाहर गाँव गए हैं। एक-दो दिन में आ जाएँगे। ऐसा कहकर भोजन करवाकर ठहराव पर भेज दिये।

रात को बारह बजे बापा ने अपने भाई के शरीर में प्रवेश किया और कोठारी स्वामी के पास आकर हृदयविदारक आक्रंद करते हुए कहने लगे-कृपा करके अब मुझे इसमें से छुड़ाइए। कोठारी स्वामी ने पूछा-पर तुम कौन हो? यह तो पहले बताओ। तो थोड़ी देर मौन रहकर संकोच के साथ अपना परिचय दिया। अरजण भगत हैं, यह सुनकर सब आश्चर्य में पड़ गए। कोठारी स्वामी ने कहा-अरे, हो ही नहीं सकता! अरजणभगत तो बहुत अच्छे भगत थे। तो उन्होंने सारी

बात कही कि महाराज तो लेने आए थे पर पुत्रवधू में मन रह जाने से मुझे छोड़कर चले गए!

संतगण ने कहा, "अभी सो जाओ। स्वामी आएँगे तो सब अच्छा हो जाएगा, ऐसा समझाकर ठहराव सोने के लिए भेजे।

सुबह बापा ने फिर प्रवेश करके रोते-रोते विनती शुरू की। तो कोठारी स्वामी ने उनसे कहा-तो तुम बता दो कि शास्त्रीजी महाराज इस समय कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं? तो एकाध मिनट आँखें मूँदकर कहने लगे कि, स्वामी इस समय भावनगर हैं। वे लोहा बाजार में लोहा खरीद रहे हैं। बात सच थी।

दूसरे दिन सुबह फिर प्रवेश करके कहने लगे कि, संतगण से कहो मुझे रसोई देनी है। ठाकोरजी के थाल में चूरमे के लड्डू बनाएँ। शास्त्रीजी महाराज इस समय भावनगर से निकल रहे हैं। दोपहर को यहाँ आ जाएँगे।

उनके कहनेके मुताबिक दोपहर होते-होते पूज्य स्वामी राजकोट आए। कोठारी स्वामी ने अरजणबापा की सारी बात कही। इतने में बापा का प्रवेश हुआ। पूज्य स्वामी के चरण पकड़कर अपनी आपबीती बताकर इस प्रेतयोनि से छुड़ाने की बिंनती की। स्वामी ने श्रीहरिकृष्ण महाराज को जल धराकर उस प्रसादी का थोड़ा जल पिलाया। हाथ में जल की अंजलि भरकर छींटते हुए कहा, भगत, अब इस जगत में कहीं मन न रखना, महाराज तुम्हें अक्षरधाम में ले जाएँगे। ऐसा कहकर स्वामी ने उपस्थित संतभक्तजन से स्वामिनारायण महामंत्र की धून करवाई और उस असद्गत् आत्मा का कल्याण किया।

वेद पुराण के वेत्ता

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की प्रज्ञा बाल्यकाल से ही अत्यधिक प्रबुद्ध थी। मेंगणी में १८ दिन में भगवद्गीता के १८ अध्याय कंठस्थ किए थे यह बात बहुत प्रसिद्ध है; परंतु केवल तीव्र यादशक्ति या तीक्ष्ण बुद्धिप्रतिभा से वेद पुराण के वेत्ता नहीं बना जा सकता। शास्त्रों का ज्ञान तभी जीव में उतरता है जब भगवान में परम निष्ठा हो और गुरु में परम भक्ति हो।

स्वामी जब वड़ताल में अध्ययन करते थे तब विद्यागुरु पंडित श्री एम्बार कृष्णमाचार्यजी की अत्यधिक महिमाभाव से सेवा करते थे। सुबह पूजा के लिए फूल-तुलसी पहुँचाना, प्रसंगोपात्त पंडितजी के वस्त्र धो देना, कमरे की सफाई कर देना... ऐसी छोटी-छोटी सेवाएँ भी स्वामी करते थे। स्वामी कई बार कहते थे कि, विद्यागुरु के नाते मेरे मन में वे गृहस्थ हैं और मैं त्यागी हूँ ऐसा भाव ही कभी नहीं आता।

शास्त्र मर्यादा के अनुसार जीवन जीने वाले प्रकांड पंडित गुरु थे तो सामने गुरु से एक कदम आगे बढ़ें ऐसे मेधावी शिष्य थे। जिस तरह गुरु द्रोण की प्रसन्नता प्राप्त करके अर्जुन ने विद्या प्राप्त की थी उसी तरह कृष्णमाचार्यजी को प्रसन्न करके स्वामी ने वेद, उपनिषद् और वेदांत के सिद्धांत हृदयस्थ किए थे।

स्वामी कई बार संतगण से कहते थे पंडितजी पढ़ाएँ तब मैं एकाग्रचित्त से पाठ सीख लेता था। फिर आसन पर जाकर मनन करता था। कुछ पढ़ने वाले संतगण को पाठ याद न रहा हो तो वे मेरे पास आएँ तो मैं उन्हें हर्ष से पढ़ाता था। उन्हें समझाने में मेरा पाठ पक्का हो जाता था और मुझे यह भी ख्याल आ जाता था कि मैं कहाँ कच्चा रह गया हूँ! फिर वह बात पंडितजी से पूछ लेता था। मेरी जिज्ञासा देखकर पंडितजी खुश होते थे, साथ ही जिसे सिखाता था वह साधु भी खुश होते थे और दौड़-दौड़कर मेरे पास सीखने आते थे।

इस तरह शास्त्रों के रहस्यों का अध्ययन करने के बाद सद्गुरु नारायणदासजी स्वामी, सद्गुरु मानत स्वामी जैसे जूनागढ़ के बड़े-बड़े संतों को उन शास्त्रों की कथा सुनाकर खुश किया। साथ ही उन बड़े संतजनों से संप्रदाय के ग्रंथों के रहस्य समझे।

साधु हुए तब से स्वामी का संकल्प था कि मुझे मूल पुरुष के सिद्धांत समझने हैं और उसके लिए स्वामी का शास्त्राभ्यास आजीवन रहा। ब्रह्मसत्रों में पूज्य स्वामी द्वारा की गई उपनिषदों की कथा की ऑडियो रिकॉर्डिंग उपलब्ध है। स्वामी उसमें उपनिषद् के मंत्रों के अर्थों को जिस गहराई से समझाते हैं वैसे अर्थ शायद ही कोई कर सकता है।

अंत में एक प्रसंग.. जिस एक प्रसंग में इस पूरी पंक्ति के सर्व गुणों के दर्शन होते हैं।

१९६९ में पूज्य स्वामी संतमंडल के साथ अफ्रिका की यात्रा पर पधारे थे। स्वामी मोम्बासा में थे।

इसी दौरान नाइरोबी में भारत के बाहर सबसे पहले बना पूर्व अफ्रिका सत्संग मंडल संचालित मंदिर था। मोम्बासा के कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर के अगुआ भक्तों का किसी भी कारण से उस मंदिर के भक्तों के साथ कुसंप हो गया था, वह इतना कि उत्सव के अवसरपे भी पूर्व अफ्रिका मंदिर के साथ आने-जाने का संबंध नहीं रहा था। विचरण के दौरान स्वामी को इस बात का ख्याल आया। स्वामी को ऐसा कुसंप जरा भी पसंद नहीं था। स्वामी ने मन

में तय किया कि, किसी भी तरह इन दोनों मंदिरों के भक्तों के बीच समाधान करवाना है।

परिस्थिति ऐसी थी कि पूर्व अफ्रिका सत्संगमंडल के मंदिर में कच्छ, काठियावाड़ और गुजरात के सभी भक्त मिलकर मंदिर का संचालन करते थे। कुछ लोगों को यह बात पसंद नहीं थी, इसलिए यह संघर्ष था। स्वामी मोम्बासा मंदिर में थे। एक दिन स्वामी ने करसनभाई, केशुभाई आदि अगुआ हरिभक्तों को पास बुलाये और पहले विक्षेप का कारण जानकर स्नेह-प्रेम से उन्हें समझाये, भाइयों! हम एक बाप के बेटे हैं, हम सबके बाप भगवान स्वामिनारायण एक ही हैं तब सत्संग में ऐसे विक्षेप से किसी को शांति न हो और महाराज भी हम पर खुश न हों और भुज में बैठे महंतस्वामी भी खुश न हों। कब तक ऐसा कुसंप चलाना है? यह नरनारायणदेव का, यह लक्ष्मीनारायणदेव का, यह हमारा, यह तुम्हारा! क्या धाम में जाएँगे तब वहाँ भी ऐसे विभाग होंगे? वहाँ तो हम सबको साथ बैठना है।

स्वामी के हृदय में सबके कल्याण की भावना थी, बात शास्त्र आधारित थी और समझाने की रीति हृदय के स्नेह की थी इसलिए सभी हरिभक्तों ने स्वामी की बात मान ली।

करसनभाई, केशुभाई आदि सभी भक्त बहुत समझदार थे, भुज के बड़े संतगण के कृपापात्र थे। उन्हें खेमेबाजी में नहीं, बल्कि सत्संग के विकास में रुचि थी। स्वामी की बात उनके दिल में उतर गई। सबने खटराग छोड़कर तय किया की पूर्व अफ्रिका सत्संग मंडल के भक्तों के साथ संबंध रखना।

जब संतगण को मोम्बासा से नाइरोबी जाना था तब स्वामी की आज्ञा से मोम्बासा के अगुआ हरिभक्त स्वामी के साथ नाइरोबी आए। इस ओर स्वामी ने पूर्व अफ्रिका मंदिर के अगुआ भक्तों श्री देवशी धनजी आदि को समाचार भेज दिए थे कि, हमारे साथ मोम्बासा के अगुआ भक्त आ रहे हैं, तुम नाइरोबी के बाहरी छोर पर हाथी रिवर के किनारे उनके स्वागत के लिए सामने आओ। पूर्व अफ्रिका के अगुआ भक्तों ने भी स्वामी की बात स्वीकार कर ली।

मोम्बासा के हरिभक्तों के साथ स्वामी नाइरोबी पधारे, पूर्व अफ्रिका मंदिर के हरिभक्त हाथी रिवर तक स्वागत करने आए थे। सबने एक-दूसरे को हार पहनाए। भाव से एक-दूसरे से गले मिले और हृदय के भार से राहत मिली! सबकी आँखें भीग रही थीं। नाइरोबी के हरिभक्त काजू-बादाम आदि सूखे मेवे के बोरे भरकर लाए थे। स्वामी ने अपने हाथों से भर-भरकर सभी भक्तों को प्रसाद बाँटा।

वहाँ से सभी भक्त मंदिर आए। संतगण ने सबके लिए रसोई बनाई और स्वामी ने सबको अपने हाथों से परोसकर भोजन करवाया।

इस तरह पूज्य स्वामी ने भक्तों के बीच हुई कुसंप की दीवारों को तोड़कर चूर-चूर करके सुख की सरिता बहाई।

ऐसे सबके संशय हरने वाले, भगवान के शरण में लेकर जीव का कल्याण करने वाले, वेद-पुराण के ज्ञाता, जिनकी वाणी कोमल और मधुर थी, ऐसे समर्थ संत गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज के चरणों में कोटि-कोटि वंदन!





ऊना के भक्तराज श्री पानाचंदभाई गांधी

पूज्य प्रभुचरणदासजी स्वामी

नीलकंठ वर्णी सन् १७९९ में सीमर होते हुए तुलसीश्याम से ऊना पधारे। यहाँ मच्छुंद्री में स्नान करके तालाब के नीचेवाले रास्ते पर तीन दिन रुके थे।

धारी से ऊना में रहने आए हंसराज गांधी एवम् गणेश शेठ को नीलकंठवर्णी का योग हुआ। हंसराज गांधी किराना की छोटी दुकान चलाते थे, जबकि गणेश शेठ "गणेश रामजी शेठ" नाम का बड़ा प्रतिष्ठान चलाते थे, जो बहुत प्रतिष्ठित था। शेठ रेवन्यू विभाग का कार्यभार भी संभालते थे। लोगों से आने वाला सरकारी कर उनके प्रतिष्ठान में रखा जाता था। इसके लिए प्रतिष्ठान को जूनागढ़ स्टेट की ओर से ४ आरबो का चौकी-पहरा भी मिलता था।

गणेश शेठ एवम् हंसराज गांधी की मित्रता कृष्ण और सुदामा की जोड़ी जैसी थी। समय के साथ दोनों सत्संग के रंग से रंग गए थे। उनमें तीसरे मित्र मिले सवचंद गांधी। उनके पुत्र का नाम था जयचंद। जयचंदभाई ने श्रीजीमहाराज के दर्शन किए थे और मूल अक्षरमूर्ति सद्गुरु श्री गुणातितानंद स्वामी के योग में सत्संग का रंग चढ़ा था।

जयचंद गांधी के यहाँ दो पुत्र हुए: मेघजी और लालजी। लालजी गांधी के यहाँ माधवजी गांधी नाम के पुत्र हुए। माधवजीभाई के छह पुत्र हुए। १) वनमाली २) दामोदर ३) दुर्लभजी ४) माणेकचंद ५) पानाचंद और ६) नरोत्तम। इनमें से वनमाली और दामोदर छोटी उम्र में ही अक्षरवासी हो गए थे।

माणेकचंदभाई सद्गुरु श्री बालमुकुंददासजी स्वामी के आशीर्वाद से अपने मामा केशवलाल शेठ के साथ व्यापार-रोजगार के लिए मुंबई गए थे।

समय के साथ उन्होंने मुंबई में सेम्युअल स्ट्रीट में 'गांधी सन्स' नाम के प्रतिष्ठान की स्थापना की, परिणामस्वरूप यह परिवार 'गांधी सन्स' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यह पूरा परिवार गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज के साथ जुड़ा हुआ है। हमें यहाँ बात करनी है, माणेकचंदभाई के भाई पानाचंदभाई गांधी की।

पानाचंदभाई का जन्म: ऊना में संवत् १९५५ फाल्गुन सुद पूर्णिमा, दि.२७/३/१८९९ सोमवार को हुआ था। पिता माधवजीभाई और माता केसरबा ने उनमें सत्संग के संस्कार डाले थे। उन्होंने कक्षा पाँच तक की प्राथमिक शिक्षा ऊना में ली। वे गरीबी के कारण अधिक अध्ययन नहीं कर सके, वे पिता को खेती एवम् धीरधार के व्यवसाय में मददरूप होते थे।

विवाह: पानाचंदभाई का विवाह १९१८ में भक्तिवान सन्नारी मणिबहन के साथ हुआ था। दंपती के घर व्रजलालभाई नाम के सुपुत्र का जन्म हुआ। ३५ साल के गृहस्थाश्रम के बाद मणिबा को श्रीजीमहाराज अक्षरधाम में ले जाने के लिए पधारे।

महापुरुष के आशीर्वाद: ऊना में सद्गुरु श्री बालमुकुंददासजी स्वामी की इच्छा से सद्गुरु श्री नारायणदासजी स्वामी ने ई. स. १९१९, संवत् १९७५ में बंगला घाट का मंदिर बनवाया। उस समय पानाचंदभाई की माताश्री केसरबा सेवा करने वाले भक्तों के लिए बाजरे की रोटी, सब्जी, छाछ आदि बनाती थीं और सुपुत्र पानाचंदभाई के साथ भेजती थीं। मंदिर में देवों की प्रतिष्ठा के लिए आचार्यश्री विहारीलालजी महाराज ने कहा 'ठाकोरजी के स्थायी थाल और नैवेद्य की व्यवस्था हो तभी हम मूर्ति प्रतिष्ठा के लिए आएँगे।' इस थाल के लिए ६००० रुपये की आवश्यकता थी। श्री नारायणदासजी स्वामी ने पानाचंदभाई गांधी के पिता श्री माधवजीभाई को इसके लिए प्रेरणा की। उनका व्यवहार साधारण था और ऊपर से वह साल कमजोर था; फिर भी उस समय उन्होंने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए रुपये ६,०००/- की सेवा की। इससे नारायणदासजी स्वामी बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद देते हुए

कहा कि 'माधवजीभाई, तुम्हारे यहाँ लक्ष्मी की वर्षा होगी। लड़कों की ओर देखकर कहा कि ये माणेकचंद, पानाचंद, नरोतम और दुर्लभदास कर्ण जैसे दानेश्वरी होंगे, सत्संग में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।' आखिर संवत् १९७६ वसंतपंचमी दि.२६/१/१९२०, सोमवार को ऊना में देवों की प्रतिष्ठा आचार्यश्री विहारीलालजी महाराज ने की।

शिखर महोत्सव: ऊना मंदिर में ठाकोरजी पधराए गए। वादविवाद में शिखर नहीं बने। दस साल बाद मंदिरकर्ता सद्गुरु श्री नारायणदासजी स्वामी धाम में पधारे। शिखरों का अधूरा कार्य पूरा करने की गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की ईच्छा थी। एक शिखर की सेवा गांधी बंधुओं ने की। दो साल में सोने के कलशों के साथ शिखर पूर्ण हुए। संवत् १९९२ वसंतपंचमी दि.२८/१/१९३६ के दिन आचार्यश्री आनंदप्रसादजी महाराज के सान्निध्य में शिखर महोत्सव आयोजित हुआ। उसमें भी गांधी बंधुओं की बड़ी सेवा थी।

२१ दिन का उत्सव: जूनागढ़ में श्री राधारमणदेव के सान्निध्य में गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने २१ दिन का महोत्सव आयोजित किया। ई.स. १९४५ में द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। उसमें करीब तीन लाख जितने लोगों ने उत्सव के दर्शन एवम् भोजन, प्रसाद आदि का लाभ लिया था। वड़ताल एवम् अमदावाद देश के मिलाकर करीब ९९९ संत पधारे। सत्संगिजीवन के १०८ संहिता पाठ हुए थे। उसके यजमान ऊना-मुंबई निवासी गांधी सन्स वाले श्री माणेकचंदभाई, दुर्लभदासभाई, पानाचंदभाई, नरोत्तमभाई,



श्रीहरिकृष्ण महाराज, श्रीराधारमण देव, श्रीरणछोड़-त्रिकमराय, श्रीसिद्धेश्वर महादेव आदि का अभिषेक एवम् वस्त्र और ७.५ किलो (७५० तोला) यानि आज के रुपये ११ करोड़ के स्वर्ण के आभूषणों की सेवा की थी। जबकि संपूर्ण उत्सव का खर्च रुपये ५,००,००० पाँच लाख (आज के १३५ करोड़) हुआ था। गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने आचार्य श्री आनंदप्रसादजी महाराज के हाथों यजमानों को श्रीजी प्रसादी के चरणारविंद दिलवाकर प्रसन्नता रूप आशीर्वाद बरसाया।

संख्या बदल गई: १९४८ में राजकोट गुरुकुल की स्थापना के बाद शास्त्रीजी महाराज मुंबई पधारे। मकान बनाने के लिए पैसे की जरुरत थी। मांगना नहीं, यह गुरुदेव का नियम था। फिर भी मन में था, गांधी सन्स वाले शेठ रु. १५,००० की सेवा करें तो गुरुकुल का काम आगे चले। पर उन्होंने १९४५ में जूनागढ़ के उत्सव में बहुत बड़ी सेवा की है इसलिए सामने से कुछ नहीं कहना। बोटाद वाले गोविंदजीभाई पारेख ने माणेकचंदभाई एवम् पानाचंदभाई आदि को गुरुकुल के निर्माणकार्य की बात की। तो परिवार के वरिष्ठ माणेकचंदभाई कहते हैं अभी जूनागढ़ में बहुत खर्च किया है इसलिए हमसे अधिक सेवा नहीं होगी: इस बार ५१,००० इक्यावन हजार दूँगा, अधिक नहीं! स्वामी कहते हैं, मुझे तो बहुत आवश्यकता थी इसलिए पंद्रह सोचकर आया था। यह तो ऊपरवाले ने संख्या बदल दी। तीन गुना कर दिया!!!

मंदिर में दर्शन का नियम: पानाचंदबापा को मुंबई के भूलेश्वर मंदिर में श्रीलक्ष्मीनारायण देव एवम् श्रीगोलोकविहारी महाराज के दर्शन करके ही प्रतिष्ठान पर जाने का नियम था। रविवार के दिन श्रृंगार आरती में पहुँच जाते थे। एक पैर पर खड़े रहकर विशेष माला फेरते, प्रदक्षिणा करते एवम् कथावार्ता सुनने का नियम रखते थे।

धर्मपत्नी का अक्षरवास: पानाचंदभाई गांधी जैसी ही उनकी धर्मपत्नी मणीबा भक्तिपरायण थीं। बीमारी के कारण शरीर अशक्त था, फिर भी वे चार-चार सीढ़ियाँ उतरकर मंदिर दर्शन करने जाती थीं, मंदिर में दो घंटे बैठकर भजन करती थीं। धाम में जाने का उन्हें आभास आ गया था। संवत् २००९ वैशाख वद ९ शनिवार, २६ जून १९५३ की शाम को फिर से स्नान करके पूजा की। महाराज की मूर्ति के चरणों में टीका किया। प्रसादी के कुमकुम से अपने भाल में टीका किया। गाय का गोबर, तुलसी आदि पवित्र वस्तुएँ मंगवाकर तैयार रखवाई थीं। रात्रि के समय कहा कि दो घंटे बाद मुझे महाराज लेने आएँगे। मेरी मृत्यु के बाद कोई रोना नहीं। सब धून करना। परिवारजनों ने धून भजन शुरू किए। डेढ़-दो घंटे हुए वहाँ श्रीजीमहाराज लेने पधारे। सबको अंतिम जय स्वामिनारायण कहकर देह छोड़ दीया!

स्वर्ण की सीढ़ियाँ: धर्मपत्नी की स्मृति में श्री पानाचंदबापा ने

गढ़पुर मंदिर में श्रीवासुदेवनारायण एवम् श्रीकृष्णबलदेवजी के सिंहासन की स्वर्ण की सीढ़ियाँ १७ अक्टूबर १९५३, संवत् २००९ दशहरा शनिवार को गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज के मार्गदर्शन अनुसार करवाई थीं।

जन्मभूमि में छात्रालय: धर्मपत्नी की स्मृति में पानाचंदभाई ने ऊना में गरीबों के लिए 'मणीबहन पानाचंद गांधी' नाम से छात्रालय भी बनवा दिया है।

ब्रह्मसत्र: गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने देहभाव कम करके ब्रह्मभाव विकसित करने के लिए १९६४ से ब्रह्मसत्र शुरू किया। सुबह पाँच से रात्रि के दस बजे तक धून भजन सत्संग कथावार्ता से धबुक्ते ब्रह्ममय ब्रह्मसत्र में सत्रार्थी देहभाव भूलकर आत्मभाव विकसित करते थे। पानाचंदभाई हर साल इस ब्रह्मसत्र में अवश्य पधारते थे। बड़े शेठ होने के बावजूद सामान्य कमरे में ठहरते थे। बड़ी उम्र में भी सभी कथाओं में शुरू से अंत तक सावधान होकर कथा श्रवण करते थे।

उत्सव: पानाचंदभाई को शास्त्रीजी महाराज के साथ आत्मबुद्धि का स्नेह था, परिणामस्वरूप शास्त्रीजी महाराज द्वारा आयोजित गुरुकुल के छोटे-बड़े तमाम उत्सवों में पधारते, यजमान बनकर सेवा सहयोग देकर पूज्य स्वामी को प्रसन्न करते थे। जूनागढ़ में कालवा के किनारे तैयार हुए गुरुकुल में नूतन छात्रालय के उद्घाटन प्रसंग पर जूनागढ़ श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज का १०७ वाँ पाटोत्सव संवत् २०२३ फाल्गुन कृष्ण दूज २७/३/१९६७ के दिन आ रहा था।

शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से इस पाटोत्सव का यजमानपद श्री पानाचंदभाई गांधी ने स्वीकार किया, देवों को अभिषेक, अन्नकूट, संतगण को भोजन, संतपूजन एवम् ठाकोरजी को वस्त्र अलंकार अर्पण किये गए थे।

जूनागढ़ गुरुकुल उद्घाटन महोत्सव: श्रीहरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव के मंगल दिन मूसलाधार बारिश के साथ जूनागढ़ गुरुकुल में नूतन छात्रालय का उद्घाटन एवम् प्रार्थना भवन में श्रीघनश्याम महाराज की चित्रप्रतिमा की प्रतिष्ठा की गई। उसकी सेवा भी श्री पानाचंदभाई गांधी ने स्वीकार की थी।

तप व्रत उपवास: पानाचंदभाई हर साल भीम एकादशी एवम् चातुर्मास की बड़ी तीन एकादशी के निर्जला उपवास करते थे, रात को घर पर जागरण करते थे, हरिजयंती का व्रत भी अवश्य करते थे।



जींदगी के अंतिम ४० साल वे दिन में एक ही समय भोजन लेते थे और भूमि शय्या पर ही शयन करते थे।

श्रीपानाचंद बापा के परिवार में सुपुत्र श्री व्रजलालभाई गांधी, उनके सुपुत्रश्री जीतुभाई, जयुभाई, भूपेंद्रभाई आदि संयुक्त कुटुंब में माटुंगा में रहते थे। गर्मी के मौसम में सब लोग आम खाते हैं। पानाचंदबापा को भी आम खाने की रुचि थी; परंतु अंतिम सालों में मन जो मांगे वह न खाने का उन्होंने नियम लिया था। घर में वरिष्ठ आम न खाएँ तो संस्कारी कुटुंब के छोटे-बड़े सदस्यों को भी आम खाने में संकोच होता।

एक बार शास्त्रीजी महाराज मुंबई में उनके घर पधरावनी के लिए पधारे थे, तब वजुभाई ने स्वामी से कहा कि 'बापूजी ने आम न खाने का नियम रखा है। वे न खाएँ तो परिवार का कोई आम नहीं खा सकता। तो उनसे कहिए कि आम खाएँ।'

स्वामी ने थोड़ी बातें करके बापा से कहा, अब आप जगत से निर्वासनिक हो गए हैं, हमारे वचन से आम खाइए। स्वामी के वचन में विश्वास रखने वाले पानाचंदबापा ने सजल नयनों से दोनों हाथ जोड़कर आज्ञा स्वीकार की। तुरंत आम काटकर लाया गया। पूज्य स्वामी ने अपने श्री हरिकृष्ण महाराज को आम धराकर अपने ही हाथों पानाचंदभाई को आम खिलाया। परिवार के सभी ने ताली बजाकर सहजानंद महाराज की जय बुलवाई।

शरबत एवम् पवित्रा के हार की सेवा: पानाचंदभाई गर्मी के दिनों में भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्थापित छह मंदिरों के देवों को शरबत धराने के लिए शक्कर, सौंफ, इलायची आदि स्वयम् ध्यान रखकर भेजते थे, ठाकोरजी को चंदन के पोशाक करने के लिए शुद्ध चंदन की लकड़ी भी भेजते थे। इसके अतिरिक्त सावन शुक्ल एकादशी को मंदिरों एवम् गुरुकुल में ठाकोरजी के लिए पवित्रा के हार भी हर साल मुंबई से खास भेजते थे। ऐसी थी उनकी इष्टदेव के

प्रति भक्ति!

कथावार्ता की दिलचस्पी: सन् १९७५-७६ में गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की तबीयत थोड़ी नादुरुस्त रहती थी। डॉक्टरों ने आराम करने को कहा। तब मुंबई के इन शेठ लोग के आग्रह से पूज्य स्वामी संतमंडल के साथ खंडाला आराम करने पधारे। कथा को ही आराम मानने वाले स्वामी यहाँ भी पूज्य ज्ञानस्वरूपदासजी स्वामी, पूज्य नारायणप्रसाददासजी स्वामी आदि संतगण से भक्तचिंतामणि, निष्कुळानंदकाव्य और वचनामृत का पठन करवाते थे। पूज्य स्वामी उस पर कथावार्ता करते थे। उस सत्संग का लाभ लेने के लिए मुंबई से पानाचंदभाई गांधी, माणेकचंदभाई, धीरुभाई गढ़ाळीवाले, रमणीकभाई दोशी, वजुभाई गांधी, रमणभाई मेहता, मुंबई स्थित गुरुकुल के कोठारी वल्लभदासभाई उनडकट आदि शेठ लोग एवम् पूना से लाभशंकरभाई पंड्या, पनवेल से दयाळजीभाई सोनेता, छगनभाई आदि भक्त पहुँच जाते थे।

माघस्नानार्थियों के दर्शन: राजकोट गुरुकुल में विद्यार्थी एवम् संत पौष-महा महीने की कड़कड़ाती ठंड में शाम को पानी भरे मटकों से सुबह जल्दी उठके स्नान करते हैं, यह सुनकर एक बार श्री पानाचंदबापा एवम् आंबा शेठ के वंशज श्री धीरुभाई गढ़ाळीवाले मुंबई से खास उसके दर्शन के लिए आए थे।

उन्होंने स्नान कर रहे विद्यार्थियों के दर्शन किए। नहाया हुआ पानी महिमा से सिर पर चढ़ाया। उस समय सरकार ने रुपये के नए कॉइन-सिक्के जारी किए थे, वह वे मुंबई से साथ लाए थे और सभी विद्यार्थियों को दिए थे। विद्यार्थी इससे बहुत खुश हुए थे।

जीवंत तर्पण: श्रीजीमहाराज के अनन्य उपासक और गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज में अनन्य गुरुबुद्धि रखने वाले पानाचंदबापा पिछले कई सालों से बहुत संयमी जीवन जी रहे थे। घर में अपार सुख-समृद्धि होने के बावजूद वे प्रतिदिन ठंडे पानी से ही स्नान करते थे, बाजरे की रोटी, थोड़ी सब्जी और दूध ऐसा सादा भोजन ही खाते थे। आवश्यकता के बिना किसी के घर बैठने न जाना या घर में भी किसी के साथ बिनजरूरी बातें न करना, यह उनका सहज स्वभाव था। सारा दिन लोकव्यवहार के आवश्यक कामकाज करने के अतिरिक्त शास्त्रपठन, माला-भजन में ही बिताते थे। अंतिम सालों में वे इस लोक के व्यवहार से उदास रहने लगे थे। एक बार उन्हें विचार आया कि लोग पुरखों के पीछे कथा करवाते हैं। तो हम मरने के बाद कथा सुनने के बजाय जीते जी ही क्यों न सुन लें! उन्होंने सुपुत्र व्रजलालभाई से बात की। वह सुनकर वे प्रसन्न हुए। कथा का



निश्चय करके गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज से बात की। स्वामी की आज्ञा अनुसार संवत् २०३९ के पवित्र अधिक फाल्गुन मास में मुंबई के हृदय समान माधवबाग में कथा आयोजित हुई। शास्त्री श्री माधवप्रियदासजी स्वामी और पुराणी श्री ज्ञानस्वरूपदासजी स्वामी इस कथा के वक्ता थे।

इस कथा के दौरान दि.१३ से २० फरवरी १९८३, इस तरह पूरे आठ दिन गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज भी यहाँ उपस्थित रहे। मुंबई के लोग अर्थपिपासु होने के साथ ज्ञानपिपासु और भक्तिपिपासु भी हैं, ऐसा कथाश्रवण करने आने वाले सत्संगी या बिनसत्संगी श्रोताओं से गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने अनुभव किया था। इस तरह गांधी परिवार ने पानाचंदबापा का जीवंत तर्पण का संकल्प पूर्ण किया।

१९८४ में परिवार ने पानाचंददादा का ८५ वाँ जन्मदिन मनाने का निश्चय किया, गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज को आमंत्रण देकर बुलवाये। पूज्य स्वामी आशीर्वाद देने के लिए खास पधारे।

आत्मबुद्धि: १९७५ के साल में शास्त्रीजी महाराज की तबीयत बहुत बिगड़ गई थी, दि.१७/३/१९७५ को मुंबई के हरकिशन अस्पताल में भर्ती हुए थे। कुछ टेस्ट जसलोक अस्पताल में किए गए, पर परिणाम शून्य ही रहे। नायर अस्पताल के मुख्य डॉक्टर दलाल साहब ने अपने अस्पताल में जैसे बढ़ई लकड़ी में ड्रिल से छेद करता है वैसे मोटी सुई से छाती में छेद करना शुरू किया। उस समय स्वामी तो स्वामिनारायण स्वामिनारायण भजन करते-करते गहरी समाधि में चले गए। छाती के छेद में इंजेक्शन की छोटी सुई डाली गई और दोनों फेफड़ों के मध्य भाग से तरल पदार्थ लिया गया। इस पानी की जाँच भी स्वामी की बीमारी का निदान नहीं कर सकी!

(अनुसंधान पेज नं. १७ पर)



क्रियासिद्धि का रहस्य

श्री रमणीकभाई रुपारेलिया

पूर्व में और आज भी समाज में विरल पुरुष ही हमेशा चुनौती (चैलेंज) स्वीकार करते हैं, पामर या सत्त्वहीन नहीं। कार्यसिद्धि भी दृढ़ मनोबल (will Power) से ही होती है, पर्याप्त साधन सामग्री से नहीं। समाज में बहुत से लोगों के पास अपार साधन सामग्री के ढेर पड़े होते हैं, अरे! वे पड़े-पड़े सड़ जाते हैं, पर केवल इतने से ही क्रियासिद्धि नहीं होती, कुछ नया सर्जन नहीं होता। क्रियासिद्धि तो व्यक्ति के दृढ़ आत्मबल-सत्त्व में निहित होती है। उपकरणों के आधार पर ही क्रियासिद्धि हो, ऐसा नहीं है। उपकरण आवश्यक तो हैं पर केवल उनके आधार पर ही कार्यसिद्धि नहीं होती। अब देखते हैं उसके उदाहरण

घटो जन्मस्थानं मृगपरिजनो भूर्जवसनं
वने वासः कन्दादिकमशनमेवंविधगुणः।
अगत्स्यः पयोधिं यदकृतकराम्भोजकुहरे
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ॥

घट जिनका जन्मस्थान है, मृग जिनके स्वजन हैं, वल्कल जिनका वस्त्र है, वन में जिनका निवास है और कंदमूल आदि जिनका भोजन है, ऐसे अगस्त्य मुनि ने समुद्र को अपने करकमलों के संपुट में रख लिया अर्थात् समुद्र की अंजलि बनाकर पी गए! इससे फलित होता है कि महापुरुषों की क्रियासिद्धि उनकी शक्ति में अर्थात् उनके दृढ़ मनोबल में रही होती है, उनके पास की साधन सामग्री में या उपकरणों में नहीं। अगस्त्य मुनि ने कुटुंब, परिवार या स्वजन अथवा समाज का कोई सहारा नहीं लिया था फिर भी समुद्रपान जैसी असंभव लगने वाली घटना को संभव बना दिया! उनकी कार्यसिद्धि का कारण ओर कुछ नहीं, केवल उनका आत्मबल था।

रथस्यैकं चक्रं भुजगयमितां सप्त तुरगा
निरालम्बो मार्गश्चरणरहितः सारथिरपि ।
रविर्गच्छत्यन्तः प्रतिदिनमपारस्य नभसः
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ॥

सूर्य के रथ को एक ही पहिया है, रथ में सर्प की लगाम से संयमित सात घोड़े झुडे हैं, आलंबन (आधार) के बिना का मार्ग है, पैर के बिना का (अरुण) सारथी है। साधनों की इतनी मर्यादा है फिर भी सूर्य रोज अनंत आकाश में विहार कर रहा है, क्योंकि महापुरुषों की कार्यसिद्धि उनके सत्त्व (आत्मबल) पर निर्भर होती है, साधनों पर नहीं।

विजेतव्या लङ्का चरणतरणीयो जलनिधि-
र्विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः ।
पदातिर्मर्त्योऽसौ सकलमवधीद्राक्षसकुलं
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ॥

लंका जैसी दुर्गम नगरी पर विजय प्राप्त करना था, समुद्र पैदल पार करना था, पुलस्त्य पौत्र रावण जैसा बलवान शत्रु था, युद्धभूमि में सहायता करने वाले केवल वानर थे, फिर भी रामचंद्रजी ने असुरकुल रावण का संहार किया और लंका पर विजय प्राप्त किया। सच है कि महापुरुषों के कार्यों की सफलता उनकी तेजस्विता पर निर्भर होती है, साधनसामग्री पर नहीं।

ऊपर के तीनों श्लोकों में क्रमशः अगस्त्य, सूर्य और रघुकुल भूषण श्रीराम के उदाहरण हैं, जो बहुत प्राचीन हैं। उन तीनों उदाहरणों का निष्कर्ष यह है कि महापुरुषों की सिद्धि उनके दृढ़ मनोबल का ही परिणाम होती है, उनके पास की साधन सामग्री का

नहीं। आज़ादी के आंदोलन में महात्मा गांधीजी के पास उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और मजबूत मनोबल के अतिरिक्त साधन सामग्री में क्या था?

इन तीन उदाहरणों में से दो उदाहरण तो प्राचीन हैं परंतु आज के समय में गुरुकुल के संस्थापक पूज्य शास्त्रीजी महाराज दृढ़ मनोबल और दृढ़ संकल्प शक्ति का सटीक उदाहरण हैं।

पेट भरकर मुसीबतें सहन करने वाले, समाज को दिव्य और मोक्षमूलक सत्संग की पहचान देकर अमर विरासत दे जाने वाले, विद्यादान और अभयदान के सदाव्रत शुरू करने वाले, विद्या, सद्विद्या और ब्रह्मविद्या की परब बाँधने वाले तथा मोक्षमूलक संप्रदाय के स्थापक भगवान श्री स्वामिनारायण के अर्थात् मूल पुरुष के सिद्धांतों को उजागर करने वाले गुरुवर्य पूज्य शास्त्रीजी महाराज के जीवन से भी मन में एक सवाल होता है कि गुरुकुल की स्थापना के आरंभकाल में उनके पास कोई सुविधा नहीं थी, न थे पैसे, न थे लोग, न थे पत्थर! नहीं था किसी का सहयोग, फिर भी ऐसी अकल्पनीय पगदंडी उन्होंने किस तरह बनाई? एक बात समझ रखें कि किसी भी कार्य की सिद्धि या अभूतपूर्व सफलता महापुरुष की दृढ़ संकल्पशक्ति में और उनके मजबूत मनोबल पर निर्भर होती है, उपकरणों या साधनसामग्री पर नहीं। महापुरुषों के दृढ़ मनोबल को साधनसामग्री की कमी, प्रतिकूल परिस्थितियाँ या अन्य किसी प्रकार का सामाजिक विरोध बाधा नहीं पहुँचा सकते। दृढ़ इच्छाशक्ति और मजबूत मनोबल के धारक को उनकी कार्यसिद्धि में उपकरणों या साधनसामग्री का अभाव या कमी कभी विचलित नहीं करते। महापुरुषों की कार्यसिद्धि तो उनके अपने दृढ़ आत्मबल में और निर्णय की दृढ़ता में रही होती है, इसका तो यह सबल प्रमाण है। नदियों को यदि समुद्र से मिलने की चाह होती है तो कैसे भी अवरोधों के बीच भी अंत में तो समुद्र से मिलकर ही चैन पाती हैं। सच है कि दृढ़ संकल्प में जो सामर्थ्य है वह सामर्थ्य साधन-सामग्री, सहायकों या अन्य उपकरणों में कभी नहीं होता।

समुद्रपान करने वाले अगस्त्य ऋषि, गगनविहारी सूर्य और रघुकुलभूषण श्रीराम, इन तीन उदाहरणों से हमें सटीक प्रमाण मिल जाता है कि महापुरुषों की क्रियासिद्धि का रहस्य उनके सत्त्व में छिपा होता है, उपकरणों में नहीं।

अस्तु जय श्री स्वामिनारायण...

(अनुसंधान पेज नं. १५ का शुरु.... पानाचंदभाई गांधी)

इस कठोर टेस्ट के समय मुंबई के पानाचंदबापा आदि शेठ की दशा भावविभोर थी। स्वामी की बीमारी उनसे सहन नहीं हो रही थी। वे सचमुच हिचकियाँ लेकर रो रहे थे। स्वामी जैसे सद्गुरु के साथ उनकी आत्मबुद्धि का यह प्रमाण था!

पाँच साल बाद महाराज लेने पधारेंगे: गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज डॉक्टरी जाँच के लिए १९८८ के जनवरी महीने में अंतिम बार मुंबई पधारे थे। दि. २ फरवरी १९८८ को पूज्य स्वामी मुंबई से राजकोट जाने के लिए निकल रहे थे। उस समय ८९ साल के श्री पानाचंदबापा ने गद्गद् हृदय से स्वामी से कहा, स्वामी, अब मुझे धाम में भेज दीजिए! एकांतिक भक्त की ऐसी प्रार्थना सुनकर थोड़ी देर स्वामी आँखें मूँदकर रहे फिर कहा अभी नहीं, पाँच साल बाद महाराज लेने पधारेंगे।



हुआ भी वैसा ही, संवत् २०४४ के महा वदी दूज के दिन रात्रि ९:३५ बजे गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज धाम में सिधारे और ठीक पाँच साल बाद संवत् २०४९ के महा वदी दूज के दिन ही रात्रि ८:०० बजे ९४ साल की उम्र में भक्तराज श्री पानाचंदबापा श्रीजीमहाराज के साथ अक्षरधाम में पधारे।

स्वावलंबी और भजनपरायणता के साथ समर्थ सद्गुरु श्री नारायणदासजी स्वामी, पुराणी गोपीनाथदासजी स्वामी एवम् गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज जैसे बड़े पुरुषों का अपार स्नेह प्राप्त करके, धन्य जीवन जीने वाले पानाचंदबापा के चरणों में शतशत वंदन!

जय स्वामिनारायण....!!!





गुरुवंदना

द्वादशश्लोकी गुरुवन्दना

साधु मूर्तिस्वरुपदासजी स्वामी



ससन्तोषं दयावन्तं सच्छास्त्रव्यसनं तथा ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं नतमस्तकः ॥

जो संतोषी हैं, दयालु हैं, सत्शास्त्र के व्यसनी हैं ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को मैं नतमस्तक वंदन करता हूँ।

जितनिद्रं जिताहारं जितप्राणं जितासनम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं विनयान्वितः ।।

जो निद्रा को जीतने वाले हैं, जिन्होंने आहार और प्राण पर विजय प्राप्त की है, ऐसे जो आसनजित हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को मैं सविनय वंदन करता हूँ।

सहजानन्दचरणेऽतीवासक्तं दृढाश्रितम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं श्रद्धयान्वितः ।।

जो भगवान श्रीसहजानंदस्वामी के चरण में अति आसक्त हैं यानि उनके चरण का दृढ़ आश्रय है, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को मैं श्रद्धापूर्वक वंदन करता हूँ।

परनिन्दादिरहितं सुखदुःखसमं तथा ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं विदितादरः ।।

जो दूसरों की निंदा से रहित हैं अर्थात् पराई निंदा नहीं करते और सुख-दुःख के प्रसंग में हर्ष-शोक से रहित रहते हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को मैं सादर वंदन करता हूँ।

स्वामिनारायणाभिख्यां लिखन्तं नित्यमेव च ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं नम्रमानसः ।।

जो नित्य स्वामिनारायण महामंत्र का लेखन करते हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को मैं नम्रता से वंदन करता हूँ।

वर्णिभक्तिपरं नित्यं वर्णिध्यानपरायणम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं गीतसद्गुणः ।।

जो भगवान श्रीनीलकंठवर्णी की हर पल भक्ति करते हैं और जो भगवान श्रीनीलकंठवर्णी के स्वरूप में ध्यानपरायण जीवन जीते हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को उनके सद्गुण गाकर वंदन करता हूँ।

भगवच्चरितं श्रोतुं वक्तुं नित्यं समुत्सुकम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं भक्तिमन्मनाः ।।

जो उत्साह से, प्रेम से भगवान के चरित्रों को सुनते हैं और कहते रहते हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को भक्तिपूर्वक वंदन करता हूँ।

धर्मोक्तब्रह्मचर्यस्य पालने सुदृढव्रतम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं विहिताञ्जलिः ।।

जो धर्मोक्त ब्रह्मचर्यव्रत का सुदृढ़ (दृढ़तापूर्वक) पालन करते हैं, ऐसे परम पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को दोनों हाथ जोड़कर वंदन करता हूँ।

धर्मामृतसदाचारो वर्तते यस्य जीवने ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं नम्रवाग्धरः ।।

जिनके जीवन में धर्मामृत का सदाचार देखने को मिलता है, ऐसे गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को नम्र वाणी द्वारा वंदन करता हूँ।

मोहमानस्नेहकामलोभैरस्पृष्टजीवनम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं सकृतज्ञतः ।।

जिनके जीवन को मोह, मान, स्नेह, काम, लोभ आदि दोषों का स्पर्श तक नहीं हुआ है, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को कृतज्ञतापूर्वक वंदन करता हूँ।

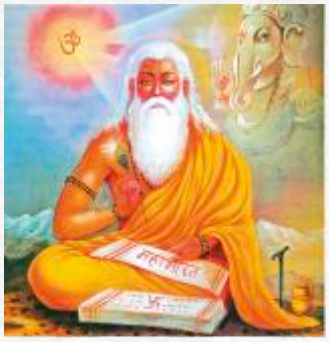
धैर्यवान् स महासाधुः वात्सल्यस्य सरित्पतिः ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं गुरुभक्तिमान् ।।

जो धैर्यवान हैं, महान संत हैं, जो वात्सल्य के सागर हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को गुरुभक्तिमान् मैं वंदन करता हूँ।

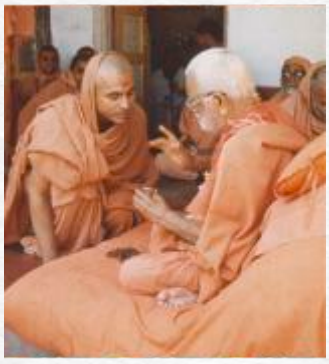
क्षमावन्तं ध्रुवमतिं शान्तं प्रमितभाषिणम् ।
देवकृष्णं गुरुं वन्दे दासोऽहं गुरुवाक्यकृत् ।।

जो क्षमाशील हैं, स्थिर मति हैं, शांत हैं, बहुत कम बोलने वाले हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर्य देवकृष्णदासजी स्वामी को गुरुवचन में जीवन जीने वाला मैं वंदन करता हूँ।

राजकोट गुरुकुल के आँगन में मनाया गया
गुरुपूर्णिमा महोत्सव–श्रीघनश्याम महाराज का २०वाँ पाटोत्सव



व्यासपूर्णिमा: इस पृथ्वी पर भगवद्स्वरूप के ज्ञानप्रवर्तन के लिए वेदादि सत्शास्त्र की रचना करने वाले महर्षि पराशर से, माता सत्यवती की कोख से जन्मे, ज्ञानावतार महर्षि कृष्णद्वैपायन (कृष्ण–श्याम, द्वैपायन–यमुना नदी के द्वीप पर जन्मे) वेदव्यासजी की जन्मजयंती आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा व्यासपूर्णिमा या गुरुपूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है। वेद के चार विभाग, ब्रह्मसूत्र, महाभारत और अठारह पुराण की रचना करने वाले व्यासजी के संपूर्ण भारत वर्ष पर रहे अगणित उपकारों के स्मरण के साथ गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए, श्रद्धापूर्वक यह पर्व मनाया जाता है। 'ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती। भगवद्स्वरूप का ऐसा ज्ञान रखने वाले और दूसरों को कराने वाले, गुरुपद की महिमा हरिचरण से भी अधिक बताई गई है।



गुरुकुल में गुरुपूर्णिमा: हजारों जीवात्माओं को इष्टदेव पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरूप की पहचान कराने के लिए गुणातीत परंपरा के आदर्श संतवर्य गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी ने राजकोट में सन् १९४८ में विद्या, सद्विद्या और ब्रह्मविद्या सहित अभयदान की गंगोत्री समान श्री स्वामिनारायण गुरुकुल की स्थापना की। सन् १९८८ से इस संस्था का संवहन कर रहे गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी की पावन उपस्थिति में यहाँ मातृसंस्था राजकोट गुरुकुल में गुरुपूर्णिमा महोत्सव प्रतिवर्ष भक्तिभावपूर्वक मनाया जा रहा है। इसके साथ प्रार्थनामंदिर में विराजमान श्रीघनश्याम महाराज का पाटोत्सव भी पिछले बीस साल से आयोजित होता रहा है।



महोत्सव-पाटोत्सव: इस साल दि.२९/७/२६ को यह विंशति पाटोत्सव तथा गुरुपूर्णिमा महोत्सव पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् पूज्यपाद महंतस्वामी के पावन सान्निध्य में २०० से अधिक पवित्र संत और हजारों भक्तजनों, भूतपूर्व विद्यार्थियों एवम् भाविकों की उपस्थिति में सत्संग कथावार्ता, भजनभक्ति और पूजन अनुष्ठान के तथा प्रासंगिक विविध कार्यक्रमों के साथ भव्यता और दिव्यतापूर्ण भक्तिभाव से मनाया गया।

धर्मजीवन संतशिबिर: पिछले कुछ सालों से मुख्य संस्था राजकोट गुरुकुल की नैमिषारण्यरूप तीर्थभूमि में गुरुपूर्णिमा के पहेले देश–विदेश स्थित प्रत्येक शाखा संस्था में सेवारत संतो–पार्षदों की आयोजित होने वाली त्रिदिनात्मक धर्मजीवन संतशिबिर, इस साल दि. २६ से २८ जुलाई के दौरान संतजीवन निर्माण के विविध आयामों के साथ परंपरागत रूप में संपन्न हुई, जिसमें पूज्यपाद गुरुमहाराज के आशीर्वचन के साथ पूज्यपाद महंतस्वामी एवम् पूज्यपाद पुराणी श्री धर्मवल्लभदासजी स्वामी आदि वरिष्ठ संतगण द्वारा आध्यात्मिक संतजीवन निर्माण की दिव्य प्रेरणा दी गई।

संत भोजनपंक्ति: विशेष रूप से इस शिबिर के प्रसंग पर, साधु आश्रम सभामंडप में नित्य मध्याह्नकाल में श्रीजी आज्ञा और प्रथा अनुसार काष्ठपात्र में, तुम्बीपात्र से जलप्रक्षालन करके, स्तुतिश्लोकगान और हरिस्मरण के साथ प्रभुप्रसाद लेते २०० से अधिक संतगण की भोजनपंक्ति के दर्शन करके यजमान भक्तजन एवम् अन्य भाविक और गुरुकुल में अध्ययन कर रहे विद्यार्थी धन्यभागी हुए। कार्यकर्ता शास्त्री हरिप्रियदासजी स्वामी ने यजमानों को पूज्य नारायणप्रसाददासजी स्वामी आदि वरिष्ठ संत के पास कंठी धारण करवाकर आशीर्वाद दिलवाए। साधु चरणप्रियदासजी स्वामी एवम् अन्य संत, स्वयंसेवकों ने यजमानों को प्रसादी अर्पण करके सेवा सराहना की।

विंशति पाटोत्सव: गुरुपूर्णिमा के दिन, प्रातःकाल में ब्राह्ममुहूर्त में शास्त्रीश्री किशोरभाई दवे आदि भूदेवों द्वारा करवाई गई वैदिक विधि और श्लोकगान के साथ पूज्य संतो एवम् यजमान भक्तजनों द्वारा प्रथम ठाकोरजी का विधिवत् महापूजन हुआ। शास्त्री श्री हरिप्रियदासजी स्वामी ने श्रीघनश्याम महाराज का अंगन्यास विधि के साथ षोड्शोपचार पूजन किया। पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् पूज्यपाद महंतस्वामी तथा पुराणी श्री धर्मवल्लभदासजी स्वामी आदि वरिष्ठ संत के हाथों श्रीघनश्याम महाराज को दूध, दही, पंचामृत, चंदनलेप, केसरजल, फलों के रस एवम् पुष्पपंखुड़ी आदि उपचार द्रव्यों से मंगल जयनाद के साथ महाभिषेक का प्रारंभ हुआ। सभी संत-पार्षदों द्वारा पुरुषसूक्त और जनमंगल स्तोत्र के मधुर संकीर्तनगान के साथ क्रमशः होते इस अभिषेक के दर्शन करके उपस्थित भक्तजनों एवम् विद्यार्थियों ने कृतार्थता का अनुभव किया।

अभिषेक के बाद पूजारी संत-पार्षदों ने मंजन करके श्रीघनश्याम महाराज को यजमानों द्वारा अर्पण किये गए नूतन वस्त्राभूषण धारण करवाए। पूज्य वरिष्ठ संतगण ने अभिषेक हुई प्रसादी के चंदन से संत-भक्तों को टीका करके प्रसादी के जल का छिड़काव किया। प्रासंगिक सभा में पूज्य महंतस्वामी ने यजमानों को पुष्पहार से सम्मानित करके भूदेवों को दक्षिणा अर्पण की।

विंशति उत्सव: इस अवसर पर विशेष रूप से पूज्य संतगण द्वारा श्री घनश्याम महाराज को गीतसंगीत के साथ पुष्पपंखुड़ी से सत्कार करके पेड़े का तथा दीप प्राकट्य के साथ केक का कटिंग करके निवेदन हुआ। प्रभु प्रसन्नता के लिए ठाकोरजी के सन्मुख संत-भक्तजनों ने रास संकीर्तन किया। पूज्य संतगण ने उपस्थित भक्तजनों को पेंड़े के प्रसाद का वितरण करके पुष्पपंखुड़ी और चॉकलेट से सबका स्वागत किया था।

अन्नकूट निवेदन: पाटोत्सव अभिषेक के बाद श्रीघनश्याम महाराज एवम् श्रीहरिकृष्ण महाराज को प्रेमभाव से संत-भक्तों द्वारा तैयार किये गए मिष्टान्न-नमकीन के विविध व्यंजन एवम् फल आदि से भरे अन्नकूट का सुबह ९:३० बजे थालपद के संकीर्तनगान और आरती के साथ निवेदन हुआ। शाम पाँच बजे तक हजारों भाविकों ने पूर्णिमा के अवसरपे इस दर्शन का लाभ लिया।

प्रातः धूनसंकीर्तन: साधु आश्रम सभामंडप में सालों से तबलावादन करने वाले पूज्य श्रीवल्लभदासजी स्वामी एवम् धून मंडल के सभी भक्तजनों ने सुबह













६:४५ से ७:१५ तक स्वामिनारायण महामंत्र की गुरुदेव की स्मृति में पिछले ३८ साल से चली आती, प्रातः नित्य धून का गान किया।

प्रातः संतपूजन दर्शन: अभिषेक एवम् धूनसंकीर्तन के बाद यहाँ विशेष और विशाल रूप में ७:१५ से ८:१५ तक संत-भक्तों की प्रातः सत्संग सभा आयोजित हुई। श्रीघनश्याम महाराज के सान्निध्य में मंच पर विराजमान गुरुस्थान के ठाकोरजी श्रीहरिकृष्ण महाराज के दोनों ओर पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् पूज्यपाद महंतस्वामी और सभी संतमंडल के सन्मुख भक्तजनों की विशाल सभा आयोजित हुई थी। यहाँ पूज्य धर्मवल्लभदासजी स्वामी एवम् संतगण के प्रासंगिक प्रवचन के बाद संत महिमा के संकीर्तन पदगान के साथ स्थानीय एवम् उपस्थित सभी भक्तजनों ने क्रमशः पधारते रहकर ठाकोरजी के दर्शन करके दोनों ओर पुष्पहार एवम् श्रीफल, शक्कर आदि नैवेद्य अर्पण करके ठाकोरजी के साथ पूज्य गुरुमहाराज एवम् पूज्य महंतस्वामी आदि संत का पूजन किया।

महोत्सव सभामंडप: गुरुकुल विद्यालय के विशाल प्रांगण में पूज्य पूर्णप्रकाशदासजी स्वामी एवम् पार्षद नीलकंठभगत और मनीषभाई क्याडा आदि स्वयंसेवक भक्तजनों द्वारा १५०*२०० फुट जर्मन डोम एवम् उसके दोनों ओर २०*१२० फुट मंडप के साथ विशाल सभामंडप तैयार किया गया। उसमें विशाल मंच पर सुंदर नयनरम्य बैकग्राउंड दृश्य के साथ कलाकृति से भरे सिंहासन में भगवान श्रीहरि एवम् उसके दोनों ओर आदि आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज एवम् सद्. गुणातितानंद स्वामी एवम् गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज और पुराणी प्रेमप्रकाशदासजी स्वामी की चित्रप्रतिमाएँ विराजमान थीं। मध्यभाग में वेदिका पर ठाकोरजी श्रीहरिकृष्ण महाराज एवम् श्रीजीप्रसादीभूत पादुका तथा पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् आस-पास पूज्य महंतस्वामी एवम् वरिष्ठ संत विराजमान हुए। दोनों ओर विशाल एलईडी स्क्रीन के साथ सुशोभित मंच के सन्मुख सोफा-कुर्सियों में अन्य तमाम संतगण, उपस्थित महानुभाव, वरिष्ठ भक्तजन, देश-विदेश के हरिभक्त और भूतपूर्व विद्यार्थी सांख्ययोगी एवम् अन्य महिलाओं की ब्रह्मधाम समान विशाल दिव्य सभा शोभित हो रही थी। पूज्य श्रीवल्लभदासजी स्वामी एवम् साधु अनुपमदासजी स्वामी और घनश्यामभाई वैष्णव एवम् विद्यार्थियों द्वारा साउंड, लाइटिंग और एलईडी की सुंदर व्यवस्था हुई।

पूज्यपाद गुरुमहाराज का आगमन: सुबह नौ बजे साधु आश्रम सभामंडप से सजाई गई खुली जीप सेवारथ में श्रीहरिकृष्ण महाराज के साथ पूज्य गुरुमहाराज एवम् पूज्य महंतस्वामी और संत-भक्त श्री डोडिया साहब के मार्गदर्शन अनुसार विद्यार्थियों की एनसीसी परेड और बैंडपार्टी के साथ महोत्सव सभामंडप में बाजे-गाजे के साथ पधारे। सभाजनों ने खड़े होकर ताली बजाकर मंत्रगान के साथ और मंच पर वरिष्ठ संतगण ने पुष्पपंखुड़ी एवम् पुष्पहार से ठाकोरजी और संतगण का स्वागत किया। सबने यथायोग्य स्थान पर आसन ग्रहण करने के बाद धूनसंकीर्तन और प्रभु के जयनाद के साथ कार्यक्रम का मंगल प्रारंभ हुआ।













स्वागत-अभिवादनः इस प्रसंग पर सबसे पहले गुरुकुल के विद्यार्थियों ने स्वागत संस्काररूप में गुरुपद की महिमा से भरा 'मैं शरन पड़ा तेरी, गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना' यह नूतन भक्तिनृत्य अनोखे उत्साह और उमंग के साथ प्रस्तुत करके ठाकोरजी के चरणों में अपनी भावना अर्पण की।

इष्टदेवपूजनः इस प्रसंग पर सभाजनों के अंतर में अपनी उपस्थिति की साक्षात् अनुभूति कराने वाले गुरुओ के गुरु इष्टदेव पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण के पूजन के लिए पूज्य गुरुमहाराज ने ठाकोरजी श्रीहरिकृष्ण महाराज का चंदन, पुष्प और वस्त्र, नैवेद्य आदि से संकीर्तन स्तुतिगान के साथ तथा पूज्यपाद महंतस्वामी ने श्रीजीप्रसादी की चरणपादुका का जनमंगल श्लोकगान के साथ तुलसीपत्रों से पूजन किया।

आचार्यश्री एवम् गुणातीत संतपूजनः आदि आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज एवम् सद्गुरु श्री गुणातितानंद स्वामी, गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज एवम् पुराणी प्रेमप्रकाशदासजी स्वामी की प्रतिमाओं का वरिष्ठ संत पूज्यपाद श्री घनश्यामजीवनदासजी स्वामी, पूज्य नारायणप्रसाददासजी स्वामी एवम् पूज्य प्रभुचरणदासजी स्वामी आदि तथा अग्रणी संतगण ने गवैया संत द्वारा गाये जाते संस्कृत श्लोकों के संकीर्तन स्तुतिगान के साथ क्रमशः पधारते रहकर काषाय वस्त्र, काष्ठपात्र, पुस्तक एवम् चंदन-पुष्प आदि से भावपूजन किया।

पूज्य गुरुमहाराज एवम् संतगण का पूजनः इस प्रसंग पर पूज्यपाद गुरुवर्यश्री देवकृष्णदासजी स्वामी का सभी संतमंडल की ओर से पूज्यपाद महंतस्वामी ने पुष्पमाला पहनाकर चरणों में वंदना करके अग्रपूजन किया था। इसके साथ वरिष्ठ संतजन ने भी पूज्य स्वामीजी का बड़े पुष्पहार द्वारा सामूहिक पूजन किया। पूज्य धर्मवल्लभदासजी स्वामी एवम् पुराणी कृष्णप्रियदासजी स्वामी ने पूज्यपाद महंतस्वामी को पुष्पमाला पहना के पूजन किया। इसके अतिरिक्त श्री लालजीभाई पटेल, श्री धीरुभाई बाबरिया, श्री धीरुभाई काकड़िया, श्री राकेशभाई दूधात, श्री वासुदेवभाई पटेल, श्री तुलसीभाई गोटी आदि वरिष्ठ भक्तजनों ने पूज्यपाद गुरुमहाराज, पूज्यपाद महंतस्वामी और मंचस्थ सभी वरिष्ठ संत का पुष्पहार से पूजन किया। सभा में उपस्थित सभी संतमंडल का गुरुकुल के विद्यार्थियों ने क्रमशः आकर कंठ में हार आरोपित करके पूजन किया।

सामूहिक गुरुवंदनाः सभी सभाजनों ने हाथ में पुष्प रखकर 'गुरुदेव के चरणों में करें करोड़ वंदन' इस प्रार्थना के संकीर्तन गान के साथ अंतर की अभिव्यक्ति और अभिनय द्वारा ठाकोरजी के चरणों में भाववंदना की।

संतगण के आशीर्वचनः इस प्रसंग पर सभासंचालक शास्त्री हरिप्रियदासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार भक्तजनों द्वारा होते गुरुपूजन, अभिवादन एवम् आनुसंगिक कार्यक्रमों के साथ वरिष्ठ संतगण और भक्तजन के उद्बोधन हुए।

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की अमृतवाणी का एलईडी के माध्यम से दर्शन-श्रवण हुआ, जिसमें गुरुदेव ने प्रवचन करते हुए बताया कि इस जीव को लगे जन्म-मरण के रोग को मिटाने के लिए शास्त्र में बतायें गये लक्षण वाले गुरु की खप रखकर











ढुंढने पडते है। ऐसे गुरु मिल जाएँ तो श्रीजीमहाराज ने स्वयम् अपने जीवन द्वारा आश्रित वर्ग को सिखाया है उसके मुताबिक अपनी धारणा छोड़ देनी चाहिए। श्रीजी महाराज स्वयम् लोजपुर में आए तब छोटी से छोटी सेवाचाकरी करते थे, सद्. मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रहकर तथा गुरु रामानंद स्वामी की सेवा करके हमें आदर्श शिष्य बनने का पाठ पढ़ाया है। इसके अतिरिक्त गुरुदेव ने बताया कि केवल सत्संगी के घर जन्म लेने से ही नहीं; परंतु जो मन, कर्म, वचन से भगवान के स्वरूप से लगा रहे वही सच्चा सत्संगी है। गुरुदेव ने सत्-असत् के विवेक द्वारा सत्संग समझ की दृढ़ता कराई।

इस प्रसंग पर **पूज्यपाद गुरुमहाराज** ने बताया कि, भगवान श्री स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से हमने यह गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया। गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज जैसे आदर्श गुरु की हमें प्राप्ति हुई है। हम शिक्षापत्री की आज्ञा के अनुसार रहेंगे तो इस लोक और परलोक में सुखी होंगे। भगवान की आज्ञा पालन करने वाले को कुछ अधूरा नहीं रहता। भगवान उसके जीवन में सग्य (सुख-समृद्धि) चढ़ा देते हैं। गुरु के आदर्शों और आदेशों का पालन करने में ही हमारे जीवन की सार्थकता है। जीवन जीना हो तो इसके जैसा जीना। हमारे जीवन से ऐसी प्रेरणा लेने का किसी को मन हो तो वह हमारे जीवन की सफलता कहलाएगी। इस तरह स्वामीजी ने धर्म सहित भक्ति करने की प्रेरणा के साथ शुभाशीर्वाद दिए।

पूज्यपाद महंतस्वामी ने बताया कि, हिंदू धर्म में गुरुपूर्णिमा श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाई जाती है। शास्त्र में गुरु के दो मुख्य लक्षण बताए गए हैं: श्रोत्रियं और ब्रह्मनिष्ठं। गुरु शास्त्र में पारंगत हों जिससे शिष्यों के संशय दूर हो जाय और उन शास्त्र के सिद्धांतों को उन्होंने अपने जीवन में अपनाया हो, ये दोनों आवश्यक हैं। भागवत में श्लोक है- 'प्रसंगमजरं पाशमात्मनः स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतं।' गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने इस गुरुकुल के माध्यम से विद्यार्थियों के हृदय में छोटी उम्र में साधुओं के प्रति प्रगाढ़ ममता हो जाए ऐसा माहौल सर्जित किया है। जाने-अनजाने भी ये मेरे भगवान और ये मेरे गुरु हैं ऐसी बचपन में हुई ममता उसे जीवनभर रहती है और वह उसके मोक्ष का कारण भी बनती है।

पूज्यपाद धर्मवल्लभदासजी स्वामी ने बताया कि जिसका मूल वेद के साथ जुड़ा हो वही सच्चा संप्रदाय कहलाता है। हमारे संप्रदाय की धुरा भी भगवान आदिनारायण से शुरू होकर लक्ष्मीजी, विश्वक्सेन एवम् परंपरा में यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य एवम् सद्गुरु रामानंद स्वामी और पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण तक यह परंपरा बही है। भगवान श्रीहरि द्वारा स्थापित आचार्यगद्दी परंपरा द्वारा संप्रदाय की दीक्षा एवम् धर्म परंपरा का वहन होता है तथा नंदसंत और उसके बाद दासपंक्ति के संत और शास्त्रों द्वारा ज्ञानमार्ग की परंपरा का वहन हो रहा है। उसमें भी भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरूप के सर्वोपरी ज्ञान के प्रवर्तक सद्गुरु गुणातितानंद स्वामी की जूनागढ़ की गरिमामय संत परंपरा में सद्गुरु बालमुकुंददासजी स्वामी, सद्गुरु धर्मस्वरूपदासजी स्वामी, सद्गुरु पुराणी गोपीनाथदासजी स्वामी एवम् शास्त्रीजी महाराज श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी और वर्तमान में पूज्य गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी तक यह परंपरा अक्षुण्ण रूप से बही है। वर्तमान में पूज्यपाद गुरुमहाराज की आज्ञा से पूज्यपाद महंतस्वामी श्री देवप्रसाददासजी स्वामी संस्था का सुकान संभाल रहे हैं। ऐसी अनुपम दिव्य परंपरा हम तक पहुँची यह भी हमारा महाभाग्य है।

पूज्यपाद पुराणी कृष्णप्रियदासजी स्वामी ने बताया कि पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीहरि इस बार 'सहजानंद गुरुं भजे सदा' उस सहजानंद स्वामी के रूप में यानि साधु के रूप में आए। महाराज ने हमें अपने जीवन और वचनों से उपदेश दिया है। शिक्षापत्री और वचनामृत में हमें अपना मानकर संबोधित किये है। उन श्रीजीमहाराज में अपार स्नेह रखने वाले और उनकी आज्ञा में ही रहने वाले संतगण की गुरुपरंपरा हमें प्राप्त हुई है। शास्त्र में एक श्लोक है.. आचिनोति च शास्त्रार्थं आचारे स्थापयति स्वयम् आचरति यस्मात् तस्मात् आचार्य उच्यते। अपने आचरण से, जीवन से उपदेश दें, प्रेरणा दें उसको गुरु कहा जाता है। हमें मिले पूज्य

शास्त्रीजी महाराज, वर्तमान में पूज्य गुरुमहाराज हों तथा पूज्य महंतस्वामी हों.. या फिर यह संतमंडल हो, ये भी सब भगवान के आज्ञाकारी संत हैं। उनकी प्राप्ति यह हमारा महद् भाग्य है।



कागदड़ी कन्या गुरुकुल के भूमिदाता **श्री वसंतभाई लींबासिया** ने बताया कि, पूज्य गुरुमहाराज एवम् वरिष्ठ संतगण ने इस सत्संग की विरासत की संभाल तथा बेटियों का जीवन सत्संग के संस्कारों से अलंकृत हो, इसके लिए कुछ अग्रणी हरिभक्तों के अंतर की अर्जी स्वीकार की। अमृत महोत्सव के प्रसंग पर कन्या गुरुकुल निर्माण और संचालन के लिए श्री लालजीभाई पटेल आदि भक्तजनों ने जिम्मेदारी स्वीकार की। आज सबसे पहले राजकोट-मोरबी हाईवे पर कागदड़ी में कन्या गुरुकुल साकार हुआ है। इस प्रथम साल में १०० जितनी बेटियों ने प्रवेश प्राप्त किया है और बहुत ही अच्छे तरीके से सांख्ययोगी महिला एवम् शिक्षित सत्संगी महिलाओं द्वारा उनका जीवन निर्माण हो रहा है। संस्था द्वारा यह तुलसीकुंड बोया गया है, उसमें सुज्ञ समाज यथाशक्ति आर्थिक सहयोग प्रदान करता है। नारीशक्ति का उत्कर्ष हो यह आज बहुत आवश्यक भी है। इसके लिए उन्होंने सभी वरिष्ठ भक्तजनों और महानुभावों से विशेष सहभागी होने की हृदय से अपील की थी।

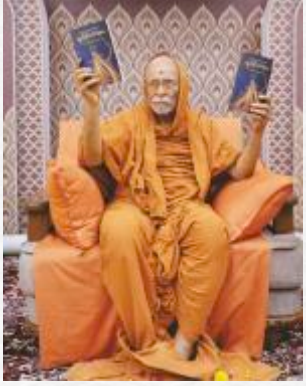


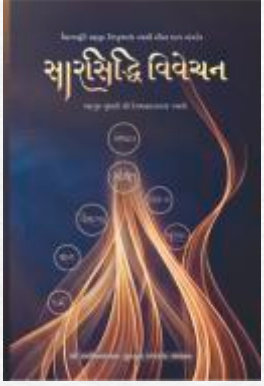
विद्यादान सहाय: गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने राजकोट गुरुकुल के प्रारंभकाल से ही गरीब एवम् मध्यम वर्ग के बच्चे विद्याभ्यास से वंचित न रहें इसके लिए साल के ३६० रुपये के शुल्क में हजारों विद्यार्थियों के जीवन सुजलाम् सुफलाम् किए। गुरुदेव की उसी स्मृति में पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् संतगण द्वारा आज भी ८०० विद्यार्थी प्रतिदिन के १/- रुपये शुल्क में अध्ययन कर रहे हैं। उसमें बहुत से सेवकों-भाविकों ने अपने माता-पिता की स्मृति में २५ हजार रुपये के हिसाब से वार्षिक विद्यादान तिथि दर्ज करवाई। उन्हें पूज्य गुरुमहाराज ने आशीर्वाद दिए।

आरोग्य सेवा: इस महोत्सव के अवसरपे आरोग्य सेवा के भागरूप में आयोजित निःशुल्क आयुर्वेद एवम् नेत्र निदान कैम्प का पूज्य संतगण द्वारा उद्घाटन हुआ, जिसमें डॉ. घीयाळ साहब, भरतभाई टीलाळा, रसिकभाई कपुरिया एवम् गुरुकुल अस्पताल के डॉक्टरों ने सेवा सहयोग दिया। कुल २९६ मरीजों ने लाभ लिया। इसके अतिरिक्त रक्तदान कैम्प में ९० बोतल का रक्तदान हुआ।

उपसंहार: भगवान श्रीहरि की कृपा से बारिश के माहौल के बीच निर्विघ्न रूप से यह महोत्सव पूर्ण हुआ। पूज्य ज्ञानजीवनदासजी स्वामी एवम् शास्त्री श्रीहरिप्रियदासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार श्री भरतभाई काथरोटिया आदि करीब ४०० स्थानीय पुरुष-महिला स्वयंसेवकगण ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए रात-दिन सेवा की। इन सभी भक्तजनों को पूज्य महंतस्वामी एवम् संतजनों ने सराहना की और आशीर्वाद दिए।







नूतन ऑडियो प्रकाशन: प्रवक्ता शास्त्री चैतन्यस्वरूपदासजी स्वामी ने इस अवसरपर पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् पूज्य महंतस्वामी और वरिष्ठ संतगण के हाथों निष्कुळानंद काव्य के स्नेहगीता और सारसिद्धि, इन दो मूल ऑडियो ग्रंथों का विमोचन करवाया। गवैया पार्षद अर्जुन भगत एवम् पार्षद घनश्याम भगत तथा तीर्थस्वरूपदासजी स्वामी आदि संगीत टीम द्वारा तैयार हुई इस ऑडियो रिकॉर्डिंग का विमोचन करके गुरुकुल यू-ट्यूब चैनल पर प्रसारित किया गया।

नूतन साहित्य प्रकाशन: महंतस्वामी लिखित 'सारसिद्धि विवेचन' एवम् पूज्य लक्ष्मीनारायणदासजी स्वामी लिखित 'सत्संग सौरभ भाग-१' का अंग्रेजी अनुवाद 'द फ्रेग्रन्स ऑफ सत्संग', इन दो पुस्तकों का भी संतगण के हाथों विमोचन हुआ।



अंतिम भाग में भक्तजनों ने पूजन सामग्री के साथ क्रमशः आकर पूज्यपाद गुरुमहाराज एवम् संतगण का दर्शन, पूजन किया। सभा संचालक द्वारा कुछ प्रासंगिक सूचनाओं के बाद दोपहर १२:१५ बजे प्रभु जयनाद के साथ कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई। इस अवसरपर भंडारी गोविंदस्वरूपदासजी स्वामी एवम् तीर्थवंदनदासजी स्वामी और परेशभाई टोपिया आदि स्वयंसेवक भक्तजनों की टीम द्वारा निर्धारित पूर्व तैयारी के साथ तैयार किए गए भोजनप्रसाद का दस हजार से अधिक भाविकों ने लाभ लिया।

यजमानों को आशीर्वाद: पाटोत्सव एवम् महोत्सव के अलग-अलग विभागों में यजमानपद स्वीकार करके आर्थिक सेवा सहयोग प्रदान करने वाले सभी भक्तजनों को पूज्य संतगण ने याद करके पूज्यपाद गुरुमहाराज के शुभ हाथों स्मृतिचिह्न अर्पण हुआ। संपूर्ण गुरुपूर्णिमा महोत्सव के मुख्य यजमान की सेवा स्वीकार करने वाले

भू.वि.श्री राकेशभाई हिंमतभाई दूधात-सूरत

भू.वि.श्री घनश्यामभाई कथीरिया, श्रीहरिग्रुप, सूरत

प.भ.श्री वासुदेवभाई सनाभाई पटेल-अमरिका

भोजनप्रसाद के मुख्य यजमान: श्री धर्मनंदन डायमंड, सूरत के प.भ. श्री लालजीभाई पटेल, श्री तुलसीभाई गोटी, श्री जेरामभाई विराणी, श्री दयालभाई गोटी,

ॐ शांति सोलार ग्रुप, अमदावाद प्रतिकभाई भुवा के द्वारा

भू.वि.श्री जिज्ञेशभाई मगनभाई भोरणिया-मोरबी

भू.वि. श्री गौतमभाई अरजणभाई वघासिया-अमदावाद

राजकोट गुरुकुल सत्संग युवक मंडल, लंदन यू.के.

भू.वि. श्री तुलसीभाई शंभुभाई रादडिया-राजकोट

श्री राज कास्टेक प्रा.लि. अमित सोजीत्रा, विमल सीदपरा के द्वारा

प.भ. श्री प्रेमजीभाई शिवाभाई भोरणिया-राजकोट

प.भ.श्री योगेशभाई रवजीभाई खेर-अमरिका

भू.वि. डॉ. श्री बाबुभाई आर. बांभोलिया-राजकोट

भू.वि. श्री रवींद्रभाई, विमलभाई, परागभाई चौहाण

भू.वि. डॉ.श्री हार्दिकभाई रमेशभाई कपोपरा-ऊना

भू.वि.श्री चिंतनभाई हरेशभाई मेहता-अमरिका

भू.वि. श्री रवजीभाई दामजीभाई भोरणिया-मोरबी

भू.वि. श्री केतनभाई धनेशभाई वागडिया-सूरत

भू.वि. डॉ. श्री पंकजभाई परमाणंदभाई थोरिया-राजकोट

भू.वि. श्री जिज्ञेशभाई गोविंदभाई लक्कड़-सूरत

भू.वि. श्री सुजीतकुमार रवजीभाई बारसिया-राजकोट

भू.वि.श्री मिलनभाई रमेशभाई मकवाणा-राजकोट

भू.वि. श्री ऋषितभाई मुकेशभाई भुवा-राजकोट

आर्थिक योगदान देकर गुरुऋण अदा करने वाले इन सभी भक्तों ने पूज्य गुरुमहाराज का पूजन करके आशीर्वाद ग्रहण किए।



श्री स्वामिनारायण गुरुकुल डलास (अमरिका) के आँगन में आयोजित

आठवाँ ब्रह्मसत्र-आठवाँ पाटोत्सव

ब्रह्मसत्र यानि...सद्गुरु श्री गुणातितानंद स्वामी बातों में कहते हैं कि 'पढ़ने जैसी तो एक ब्रह्मविद्या है।' सद्गुरु शतानंद स्वामी जनमंगल स्तोत्र में भगवान श्रीहरि के १०८ नामकरण में कहते हैं, 'ॐ ब्रह्मविद्याप्रवर्तकाय नमः'। उस ब्रह्मविद्या के प्रवर्तक भगवान श्री स्वामिनारायण के साक्षात्कारी और ब्रह्मविद्या में पारंगत गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी ने सर्वप्रथम सन् १९६४ में राजकोट गुरुकुल में जन्माष्टमी की छुट्टी के पर्व पर ब्रह्मविद्या की पाठशाला समान ब्रह्मसत्र की शुभ शुरुआत की। इस ब्रह्मसत्र में जगह-जगह से पधारने और जुड़ने वाले मुमुक्षु साधकों एवम् एकांतिक भक्तजनों को पूज्य स्वामीजी और संतगण स्थूल-सूक्ष्म शरीर की विभावना से ऊपर उठकर अपनी आत्मा के साथ जुड़ी इंद्रियों-अंतःकरण की वृत्ति को भगवान में रखने के लिये साधना-आराधना सीखने और सफल करने का माहौल वो ही ब्रह्मसत्र।

'निजात्मानं ब्रह्मरूपं' इस श्रीजी सिद्धांतवचन के मर्मज्ञ स्वामीजी कथावार्ता द्वारा ब्रह्मसत्रार्थियों में आत्मभाव की दृढ़ता कराते थे। स्वामीजी द्वारा आयोजित उस ब्रह्मसत्र के दूरगामी प्रभाव आज भी देश-विदेश स्थित संत-भक्तों में देखने को मिलते हैं।

अमरिका में ब्रह्मसत्र: राजकोट गुरुकुल में उस ब्रह्मसत्र की परंपरा अद्यापिपर्यंत पूज्यपाद गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी और संतगण द्वारा बह रही है। उसके साथ आज देश-विदेश में स्थायी हुए संस्था के भूतपूर्व विद्यार्थियों और विकसित होती शाखाओं में सेवा करते संत-भक्तों के सत्संग पोषण के लिए पूज्यपाद गुरु महाराज के शुभाशीर्वाद के साथ पूज्यपाद महंत स्वामी के शुभ संकल्प से सन् २०१९ में अमरिका में डलास गुरुकुल में प्रथम पाटोत्सव के प्रसंग पर ही इस ब्रह्मसत्र योजना का मंगल प्रारंभ हुआ, जो हर साल पूज्य महंत स्वामी की प्रेरक उपस्थिति में आध्यात्मिक मुद्दों पर चढ़ती कला के साथ आयोजित होते रहे हैं। इस साल आयोजित आठवें ब्रह्मसत्र का यथा तथा विवरण नीचे दिया गया हैं।

पूर्व तैयारी: दि.११ से १८ जुलाई, २०२६ के दौरान आठवें पाटोत्सव के साथ आयोजित हुआ यह आठवाँ ब्रह्मसत्र सद्गुरु निष्कुळानंद स्वामी रचित 'सारसिद्धि' ग्रंथ अंतर्गत 'भाग्य जाग्या रे आज जाणवा' इस पंक्ति के मध्यवर्ती मुद्दे के साथ संपन्न हुआ।

इसके लिए पूज्य शांतिप्रियदासजी स्वामी एवम् सोहिलभाई विराणी आदि संत-भक्तजनों की टीम ने दो महीने पहले से चर्चा-विचारणा की। युवा कार्यकर्ता संत-भक्तों की विविध समितियों ने ठहराव, भोजनप्रसाद, सेवा सरभरा के लिए सर्व सामग्री एवम् सेवारथ वाहन की सुचारु रूप में व्यवस्था की।

संत-भक्तों का आगमन: अमरिका में विचरण कर रहे पूज्यपाद महंतस्वामी और अन्य स्थानीय शाखाओं में से कुल बीस करीब संत एक-एक सप्ताह पहले यहाँ आ चुके थे। अमरिका के अन्य शाखा केंद्र न्यूजर्सी, फीनिक्स, कैलिफोर्निया, शिकागो, स्प्रिंगफील्ड, आदि एवम् कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और भारत से भी कुछ श्रद्धालु मिलाकर कुल १२०० पुरुष-महिला भक्तजन क्रमशः इस सत्र में आए और उत्सव का लाभ लिया।

ब्रह्मसत्र का मंगल प्रारंभ: दि.११ को प्रातःकाल में षोड्शोपचार पूजन के साथ ठाकोरजी की महानिराजन आरती से हुआ। प्रथम ठाकोरजी के पूजन के साथ पोथी पूजन हुआ। बाजे-गाजे और धूनसंकीर्तन के साथ यजमान परिवार एवम् अन्य महिलाओं द्वारा गुरुकुल कैम्पस में पोथीयात्रा आयोजित हुई थी।

पोथीयात्रा वापस आते समय धूनसंकीर्तन के साथ प्रार्थनामंदिर में श्रीघनश्याम महाराज एवम् देवों के सन्मुख मंच स्थित वेदिका पर ठाकोरजी को विराजमान करके संतगण द्वारा पोथीजी का स्थापन हुआ। प्रवक्ताश्री द्वारा किये गए प्रभु जयनाद और श्लोकगान के साथ यजमान भक्तजनों ने ठाकोरजी, पोथीजी और वक्ता संत का चंदन-पुष्पहार आदि से पूजन किया।

मंगलप्रवचन: यजमान भक्तजनों ने पूज्य महंतस्वामी एवम् उपस्थित संतगण का पुष्पहार से पूजन किया उसके बाद पूज्यपाद महंतस्वामी ने बताया कि यह ब्रह्मसत्र कोई उत्सव या मेला नहीं है। श्रीजीमहाराज द्वारा प्रस्थापित सत्संग की प्रथा के अनुसार इस ब्रह्मसत्र में संत-भक्त एकत्र होकर सत्संग कथावार्ता द्वारा परस्पर के प्रेरक अंग पहचानकर अपने सत्संग की पुष्टि हो, ऐसे उपाय खोजकर जीवन में अपनाएँ, यह हेतु है। गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने सर्वप्रथम राजकोट में इस ब्रह्मसत्र की शुभ शुरुआत की थी। उस ब्रह्मसत्र की प्रसादी हम तक पहुँची है, इसका आत्मविचार करके लाभ लेना चाहिए जिससे हमारा जीवन धन्यभागी बने।

इस ब्रह्मसत्र के कुछ विशेष निष्कर्ष बिंदु:

प्रतिदिन सुबह के सत्र में ५०० से ६०० हरिभक्त एवम् शाम के सत्र में ९०० से ११०० हरिभक्त जुड़ते थे।

बाहर से पधारे हरिभक्तों के लिए ठहराव की व्यवस्था स्थानीय भक्तों ने अपने घर पर करके अनोखी आत्मीयता दिखाई।

शास्त्री सत्यसंकल्पदासजी स्वामी ने संत-भक्तों के प्रेरक आख्यान संकीर्तन गान के साथ श्रवण कराकर उससे सीखने को मिलता आत्मबोध और सत्संग में बढ़ने-घटने की समझ की दृढ़ता कराई थी।

पूज्यपाद महंतस्वामी की साधुता से भरी अनुभवजन्य भगवद्गीता एवम् स्वामी की बातें और वचनामृत प्रश्नोत्तरी संबंधी सत्संग कथावार्ता के श्रवण से श्रीजीमहाराज के स्वरूप की एवम् धर्मनिष्ठा की दृढ़ता होती थी।

संत-भक्तों के ग्रुप में प्रतिदिन आयोजित होती ज्ञानगोष्ठी भी सभी के लिए गलतफहमी दूर कराकर श्रद्धा और विश्वास में वृद्धि करके आत्मीयता दृढ़ कराती थी।

पूज्य नीलकंठचरणदासजी स्वामी, पूज्य भगवदचरणदासजी स्वामी, शास्त्री मुकुंदस्वरूपदासजी स्वामी, साधु वेदांतस्वरूपदासजी स्वामी एवम् साधु जगतप्रकाशदासजी स्वामी आदि संत ने नंदसंत के प्रसंगों का श्रवण कराया।

इस ब्रह्मसत्र में जुड़े २०० से अधिक १० से २० साल के बच्चों, किशोरों और युवाओं के लिए नित्य 'यूथसेशन' आयोजित होता था, जिसमें साधु शांतिप्रियदासजी स्वामी, साधु ब्रह्मदर्शनदासजी स्वामी, साधु मंत्रस्वरूपदासजी स्वामी, साधु वेदांतस्वरूपदासजी स्वामी आदि संत एवम् कार्यकर्ता भक्तजन नई पीढ़ी के प्रश्नों का सटीक समाधान देते थे और वर्कशॉप, प्रोजेक्ट्स एवम् प्रेजेंटेशन











द्वारा हिंदू सनातन धर्म और सत्संग का ज्ञान परोसते थे। इस सत्र से युवाओं को बहुत संतोष और समाधान प्राप्त हुए थे।

प्रतिदिन दोपहर १२ से १ महिला मंच अंतर्गत महिलाओं को एवम् रात को ९ से १० के दौरान बच्चों और युवाओं द्वारा प्रस्तुत होते 'सत्संग का रंग' कार्यक्रम में सभी अपनी कलाएँ प्रस्तुत करते थे।

दि.१६/७ को रथयात्रा के पुनीत पर्व पर गुरुदेव की १२५वीं जन्मजयंती के साथ भगवान जगन्नाथजी की नगरयात्रा गुरुकुल परिसर में धूनसंकीर्तन के साथ बाजे-गाजे के साथ आयोजित हुई। इस अवसरपर गुरुदेव की ऑडियो-वीडियो कथा का श्रवण हुआ।

इस ब्रह्मसत्र के दौरान प्रतिदिन सुबह ३ घंटे भक्तचिंतामणि यज्ञ का होमात्मक अनुष्ठान होता था, जिसमें भक्तजन उत्साह के साथ लाभ लेकर यज्ञनारायण को आहुति अर्पण करते थे।

दोपहर के बाद के सेशन के बाद शाम ६:०० बजे भक्तिफेरी में संत-भक्त परस्पर विशेष आत्मीयता विकसित करते थे।

स्वयंसेवक सेमिनार: दि. १७ जुलाई को इस सेमिनार में पूज्यपाद महंतस्वामी की प्रेरक उपस्थिति में अमरिका, कनाडा से ४६० जितने स्वयंसेवकों ने आगामी साल के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा एवम् आध्यात्मिक जीवन की एक नई दिशा का बल प्राप्त किया।

आरोग्य सेवा कैम्प: दि.१२ जुलाई को सहजानंद आरोग्य टीम द्वारा आयोजित हेल्थकैम्प में ८० व्यक्तियों को ब्लड रिपोर्ट के बाद उस संबंध में डॉक्टरों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया। दि.१८ को रक्तदान कैम्प हुआ।

भाग्य जाग्यां रे आज जाणवां: इसके अंतर्गत शास्त्री कृष्णचरणदासजी स्वामी द्वारा आयोजित इंटरेक्टिव सेशन बहुत रसप्रद रहा था, जिसमें पहले दिन ध्येय की स्पष्टता, दूसरे दिन सत्संग में अंग पहचानने की और उसकी दृढ़ता करने की रीति, तीसरे दिन सत्संग में बढ़ने-घटने का कारण, चौथे दिन उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे इस संबंध में वर्कशॉप आयोजित हुआ। पाँचवें दिन प्राप्ति की महिमा और उससे 'भाग्य जाग्यां आज जाणवां' इस संबंध में भगवान श्रीहरि द्वारा स्थापित इस दिव्य सत्संग की महत्ता के बारे में बयान दिया गया।

आठवाँ पाटोत्सव: इस ब्रह्मसत्र के अंतिम दिन दि. १८ जुलाई, २०२६ को श्रीघनश्याम महाराज, श्री लक्ष्मीनारायण देव, श्री राधाकृष्णदेव एवम् श्रीविघ्नविनायक देव आदि सर्व देवों का विधिवत् संत-भक्तों द्वारा प्रथम ठाकोरजी का महापूजन और वरिष्ठ संतगण द्वारा अंगन्यासपूजन विधि हुए।

गवैया युवक मंडल द्वारा किये गए स्तोत्र और वंदुपद के संकीर्तनगान के साथ पूज्यपाद महंतस्वामी एवम् उपस्थित सर्व संतगण द्वारा दूध, दही, पंचामृत आदि से होते इस महा दिव्य अभिषेक के दर्शन करके भक्तजनों ने अलौकिक धन्यता का अनुभव किया था।

स्वयंसेवकों की सेवा: इस ब्रह्मसत्र के दौरान प्रतिदिन सुबह गुरुकुल में ३५० कार और शाम को ६०० से अधिक कारों की सुव्यवस्थित पार्किंग और ट्रैफिक नियमन की सेवा पार्किंग विभाग के भक्तों ने संभाली। रसोई विभाग की टीम ने सुबह, दोपहर और शाम को बच्चों और अन्य के लिए विविध व्यंजनों से भरा भोजन बनाना, परोसना एवम् साफ-सफाई सेवा की थी। इसके अतिरिक्त सभा व्यवस्था, स्टेज व्यवस्था, पूजन व्यवस्था, ऑडियो-वीडियो और फोटोग्राफी, फूलहार, डेकोरेशन, सिक्युरिटी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, महिला विभाग... जैसे अनेक प्रकल्पों में छोटे-बड़े गुरुकुल सेवकों ने अथाग सेवा करके भगवान और संतजनों का अपार स्नेह प्राप्त किया था। हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति के बीच भी सेवक भक्तों का अनुशासन और सेवाभावना एवम् हँसता चेहरा सबको स्पर्श कर जाता था।



वर्तमान धारण के अवसरपे महंतस्वामी का दक्षिण भारत की शाखाओं में विचरण





गतांक के अनुसंधान में पूज्यपाद गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी ने जून-२०२६ शैक्षणिक वर्ष में गुजरात भर की राजकोट गुरुकुल शाखाओं में प्रवेश लिए नये ५२१८ विद्यार्थियों को भगवान श्रीहरि की शरणागति के साथ पंच वर्तमान धारण कराने और कंठी बाँधने के लिए एक-एक महीना संतगण के साथ विचरण किया।

पूज्य स्वामीजी की अवस्था को ध्यान में लेकर उनकी आज्ञा से पूज्यपाद महंतस्वामी श्री देवप्रसाददासजी स्वामी ने इस साल दि.६ से ३१ अगस्त २०२६ तक दिल्ली एवम् दक्षिण-मध्य भारत गुरुकुल शाखाओं में स्कूल छात्रालय में प्रवेश लिए नये विद्यार्थियों को वर्तमान धारण कराने के लिए २५ दिन तक सत्संग विचरण किया। पूज्य स्वामीजी के साथ इस विचरण में साधु हरिवत्सलदासजी स्वामी एवम् साधु जयमुनिदासजी स्वामी और भू.वि. श्री गौरांगभाई रंगाणी जुड़े थे।

इस विचरण के प्रसंग पर पूज्य स्वामीजी के शुभ हाथों वह शाखाओं में तैयार हुई कुछ नूतन इकाइयों का प्रारंभ और उद्घाटन पवित्र संतगण और महानुभावों की उपस्थिति में हुआ।

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज द्वारा आत्मनिवेदीभाव से पूजे गए ठाकोरजी श्रीहरिकृष्ण महाराज के साथ पूज्य महंतस्वामी और संतगण पधारते तो उन शाखाओं में सेवारत संतगण, संचालक, व्यवस्थापकों, आचार्यश्री तथा शिक्षकगण ने भावभक्ति के साथ उत्साहपूर्वक बाजे-गाजे के साथ स्वामीजी का स्वागत-अभिवादन किया।

उन शाखाओं में कार्यकर्ता संत एवम् व्यवस्थापकगण ने विशेष सत्संगसभा आयोजित करके विद्यार्थियों को वर्तमान धारण एवम् श्रीहरि की शरणागति की महिमा वर्णित की। पूज्य महंतस्वामी ने मंगल आशीर्वचन देकर उपस्थित भक्तजनों, विद्यार्थियों, स्टाफ के सदस्यों और शिक्षकगण को कृतार्थ किया।

यहाँ के कार्यकर्ता शास्त्री कृष्णचरणदासजी स्वामी एवम् शास्त्री शुकवल्लभदासजी स्वामी आदि संतगण के मार्गदर्शन अनुसार स्वामीजी के विचरण का कार्यक्रम रहा था। उसके साथ वर्तमान धारण कराये गए विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार है।

दि. ६-७/८, दिल्ली गुरुग्राम शाखा, संख्याः ७२ विद्यार्थी
दि.८-१०/८, रायपुर शाखा, छत्तीसगढ़ संख्याः २४३
दि.११ से १२/८, नागपुर शाखा, संख्याः २५६ विद्यार्थी
भिलाई शाखा, संख्याः १४४ विद्यार्थी
दि. १३ से १७/८, बेंगलोर शाखा, संख्याः ६०० ''
दि. १४ से १५/८, मैसूर शाखा, संख्याः ३२३ ''
दि. १८ से १९/८ तिरुपति, संख्याः २०० ''
दि. २०/८, गुलबर्गा शाखा, संख्याः १४० ''
दि. २०/८, सोलापुर शाखा, संख्याः १२२ ''
दि. २० से २३/८, हैदराबाद शाखा, संख्याः १४९५ ''
दि. २२, बीदर शाखा, संख्याः ५२ विद्यार्थी
दि. २४/८, सिकंदराबाद शाखा, संख्याः ३०५'
दि. २४/८ सूर्यापेट शाखा, संख्याः ८१ ''
दि. २५/८, विजयवाड़ा शाखा, संख्याः २६१ ''
दि. २६/८, झेडचेरला शाखा, संख्याः ३८९ ''
दि. ३१/८, चौक मुंबई शाखा, संख्याः १८० विद्यार्थी

स्वामीजी ने इस विचरण के दौरान कुल ४८६३ विद्यार्थियों को वर्तमान धारण के साथ भगवान श्रीहरि की शरणागति कराई। इसके अतिरिक्त रायपुर गुरुकुल में नूतन इंडोर स्पोर्ट्स एकेडमी एवम् इलेक्ट्रिक कुकिंग सिस्टम का उद्घाटन हुआ। १५ अगस्त को बेंगलोर गुरुकुल में ध्वजवंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। दि. २९ को झेडचेरला गुरुकुल में उपवासी संतजनो को पारणा कराया।

विशेष रूप से पूज्य स्वामीजी के हाथों स्थानीय महानुभावों के साथ दि. २५/८ को नूतन अमरावती शाखा का भूमिपूजन, २६/८ को खम्मम एवम् ३०/८ को कर्नूल शाखा का पूज्य स्वामीजी के हाथों खातमुहूर्त विधि हुई। दि.२८/८ को हैदराबाद में स्वामीजी की उपस्थिति में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल निकोल (अमदावाद) के आँगन में

स्फटिकमणि के शिवलिंग श्रीसिद्धेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा





प्रास्ताविक: पूज्यपाद गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी के शुभाशीर्वाद और पूज्यपाद महंतस्वामी के शुभसंकल्प और प्रेरणा से अमदावाद के मिनी सौराष्ट्र के रूप में पहचाने जाने वाले निकोल क्षेत्र में सन् २०२१ में यहाँ प्रार्थनामंदिर में श्रीघनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा के साथ गुरुकुल का उद्घाटन हुआ।

बाल-युवा सत्संगमंडल की विविध प्रवृत्तियों और उत्सव प्रसंग एवम् भजन अनुष्ठान के अनेक आयोजनों के साथ पूज्य साधु योगेश्वरदासजी स्वामी और साधु वेदांतदर्शनदासजी स्वामी आदि संत उत्साह से यहाँ सेवा कर रहे हैं।

यहाँ सुबह-शाम अनेक भाविक भक्त प्रार्थना मंदिर में विराजमान श्रीघनश्याम महाराज, श्रीलक्ष्मीनारायणदेव और श्रीसीताराम भगवान के दर्शनार्थ पधारते रहते हैं। उन सबकी शुभभावना से यहाँ गुरुकुल कैम्पस में मुख्य मार्ग स्थित ईशान कोने में नवनिर्मित नूतन मंदिर में स्फटिकमणि के शिवलिंग रूप में श्रीसिद्धेश्वर महादेव की विधिवत् प्रतिष्ठा पूज्यपाद गुरुवर्य श्री देवकृष्णदासजी स्वामी के शुभ हाथों से सं. २०८२ सावन शुक्ल-८, दि.२०/८ को कुछ विशेष आयोजनों के साथ संपन्न हुई।

इसके लिए केवल ४० दिन में नवनिर्मित नव्य-भव्य तीन मंदिर तैयार करने में नीलकंठधाम से संतगण एवम् निकोल गुरुकुल में बटुकभाई रादडिया, मनसुखभाई रामाणी, पीयूषभाई पानसुरिया और ब्रिजेशभाई अमीपरा ने सेवा की।

शिवकथा-प्रतिष्ठा याग: दि.१७ से २० तक यहाँ सावन मास में शिव प्रतिष्ठा के अवसर पर उत्सव का मंगलमय माहौल सृजित हुआ। इस प्रसंग पर डोम सभामंडप में शास्त्री चैतन्यस्वरूपदासजी स्वामी ने दि.१७ और १८ दो दिन तक रात को ९ से ११ शिव माहात्म्य की संकीर्तन गान के साथ कथा का अद्भुत श्रवण कराया।

दि.१७ से १९ त्रिदिनात्मक शिव प्रतिष्ठा के अवसरपे उमरेठ के पवित्र भूदेव शास्त्री श्री मितुल महाराज और सहयोगी भूदेवों ने महा रुद्राभिषेक एवम् प्रतिष्ठा यागविधि की। जिसमें यजमान परिवार ने यज्ञ आहुति अर्पण की।

शिवस्तुति वंदना: दि.१९ को शंकर-पार्वती स्तुतिगान वंदना के साथ गायक अमितभाई क्याडा एवम् हास्य साहित्यकार श्री हितेषभाई अंटाळा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। दि.२० को श्री राज गढ़वी एवम् भू.वि. गायक श्री मयूर दवे द्वारा शिवस्तुति गान हुआ।

नगरयात्रा: दि.१९ को शाम ४ से ७ बजे तक निकोल के मुख्य मार्गों पर ठाकोरजी के साथ १५ संत और स्वयंसेवक भक्तजन, अलग-अलग ड्रेसधारी विद्यार्थी एवम् कीर्तनगान करती महिलाएँ तथा शिव अभिषेक करते बालऋषियों द्वारा विविध रथों में बाजे-गाजे के साथ नगरयात्रा आयोजित हुई।

प्रतिष्ठाविधि: दि.२० को प्रातःकाल में वेदोक्त विधि और महापूजन के साथ शिवलिंग का स्थापन हुआ। इस प्रसंग पर पूज्यपाद गुरुमहाराज ने शास्त्रोक्त रीति से शिवजी की अंगन्यास विधि करके प्रतिष्ठा आरती उतारी, उसके साथ बगल के मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज की आरती भी उतारी, जहाँ हर हरिजयंती पर अभिषेक होगा। इस प्रसंग पर सभा में पूज्य प्रभुचरणदासजी स्वामी ने संतगण द्वारा प्राप्त हुए इस स्फटिकमणि के शिवलिंग की महिमा और प्रताप वर्णित किया। पूज्यपाद गुरुमहाराज ने आशीर्वचन दिए कि ये सिद्धेश्वर महादेव सभी के संकल्प और मनोकामना पूर्ण करेंगे। पूज्य स्वामीजी ने मुख्य यजमान श्री दिगंतभाई गजेरा, श्री डायाभाई कच्छी और निखिलभाई डोबरिया एवम् संपूर्ण उत्सव के मुख्य यजमान हर्षदभाई रादडिया आदि को स्मृतिचिह्न अर्पण करके उनकी सेवाभावना को सराहा।

शाखा संस्था समाचार

भारत के प्रांतों में संतगण का सत्संग विचरण: दि.२८/५ से २१/७ के दौरान पुराणी श्री कीर्तनप्रियदासजी स्वामी, साधु अनंतस्वरूपदासजी स्वामी एवम् साधु गुणदर्शनदासजी स्वामी, इन तीन संतजन ने दो महीने तक वलसाड, मुंबई, पूना, कोल्हापुर, मापसा, मडगाँव, कुम्टा, हुबली, बेंगलोर, कोयंबतूर, कोचीन, त्रिवेंद्रम, मार्थंडम, तिरुनेलवेली, तेनकाशी, त्रिची, मन्नारगुडी, पुडुचेरी, चेन्नई, तिरुपति, अनंतपुर, कर्नूल, हैदराबाद, बारामती, पूना, बोईसर, वापी आदि स्थानों में सत्संग विचरण करके भक्तजनों के यहाँ सत्संग सभाएँ आयोजित करके २०० जितनी पधरावनी और ५१ नए मुमुक्षुओं को भगवत शरणागति कराई।



सूरत: यहाँ गुरुकुल के उपक्रम में गवैया अक्षरप्रियदासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार नीलकंठधाम में दि.१५-१६ अगस्त, इस तरह दो दिन सहजानंद पर्व आयोजित हुआ, जिसमें सूरत आदि शहरों से २८० जितने डॉक्टर, अधिकारीश्री, स्कूल के डायरेक्टर्स और बिजनेसमैन आदि अग्रणियों ने भाग लिया। पूज्य धर्मवल्लभदासजी स्वामी की प्रेरक उपस्थिति के साथ इस पर्व में संतगण द्वारा सत्संग सेमिनार, रासोत्सव आदि आयोजित हुए।



नवसारी: यहाँ स्वामिनारायण गुरुकुल सांस्कृतिक गौधाम के उपक्रम में दि.२४ और २५/७ के दौरान अतिवृष्टि के कारण बिलीमोरा के देवधा, तलियारा, सरीखुर्द, कलमठा, मुरली आदि बाढ़ग्रस्त गाँवों में घरों में फँसे पाँच हजार जितने लोगों को गरम भोजन का दो दिन तक सेवारथ वाहन द्वारा वितरण हुआ। इसके लिए संतगण के साथ ईंटालवा, जलालपुर, नवसारी आदि के स्वयंसेवकों ने सेवा दी।



नीलकंठधाम-उपवीत संस्कारविधि: दि.५/७ को यहाँ धर्मजीवन संस्कृत गुरुकुल में अध्ययन कर रहे ५६ जितने ब्राह्मण बटुकों को यज्ञोपवीत संस्कारविधि के साथ वरिष्ठ संतगण की प्रेरणा से संस्था द्वारा जनेऊ अर्पण किया गया। नीलकंठ प्रभु के सान्निध्य में वैदिक यज्ञयाग विधि और पूज्य संतगण के आशीर्वचन के साथ ब्राह्मण बटुकों के ब्रह्मचर्य जीवन के नए अध्याय की इस संस्कारविधि के साथ शुरुआत हुई। इस प्रसंग पर उनके अभिभावकश्री भी उपस्थित रहे थे, भोजन समारोह भी आयोजित हुआ।



नवसारी: फ्री पार्किंसन्स (कंपवा) कैम्प: दि.५/७ को यहाँ गुरुकुल एवम् लायंस अस्पताल, सरदार पटेल अस्पताल तथा महेंद्र ब्रदर्स और धर्मज पार्किंसन्स केयर ट्रस्ट के संयुक्त उपक्रम में निःशुल्क कंपवा निदान एवम् मार्गदर्शन कैम्प आयोजित हुआ, जिसमें १०० मरीजों ने लाभ लिया। भू.वि. प्रकाशभाई राखोलिया की प्रेरणा और मार्गदर्शन अनुसार यह संपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस प्रसंग पर पूज्यपाद प्रभुस्वामी, और संतगण के अतिरिक्त मेडिकल क्षेत्र और कॉलेज के डॉक्टर एवम् प्रोफेसर आदि उपस्थित रहे।



गुरुकुल शाखा-गुरुपूर्णिमा: दि. २९/८ को राजकोट गुरुकुल में सुबह आयोजित गुरुपूर्णिमा महोत्सव के बाद शाम को उसी सभामंडप में स्कूल के विद्यार्थियों और अभिभावकश्री की उपस्थिति में संचालक साधु जनमंगलदास स्वामी और आचार्य श्री दवे साहब एवम् शिक्षकों के सहयोग के साथ मातृपितृगुरुवंदना कार्यक्रम आयोजित हुआ। दि.१९/८ को बालमंडल संचालकों द्वारा बच्चों के लिए गुरुवंदना के साथ आयोजित हुआ। उसी तरह देश-विदेश की प्रत्येक शाखा में भी पूज्यपाद शास्त्रीजी महाराज का शास्त्रोक्त रीति से काषाय वस्त्र आदि से एवम् पूज्य गुरुमहाराज का पुष्पहार से भावपूजन हुआ।

सावन मास में गुरुकुल शाखाओं में आयोजित विशेष भजन अनुष्ठान-व्याख्यानमाला

राजकोट: यहाँ गुरुकुल में सावन मास के दौरान संत-भक्तों द्वारा प्रतिदिन रात को ८:४५ से १०:१५ तक हर साल की तरह भक्तचिंतामणि ग्रंथ का सामूहिक रूप में अनुष्ठान हुआ है।

नवसारी: यहाँ गुरुकुल में प्रतिदिन आसपास के गाँवों से दोपहर के बाद महिलाएँ और रात को ९ से ११ के दौरान पुरुष भक्तों द्वारा स्वामिनारायण महामंत्र की अखंडधून हो रही है।

ऊना (आनंदगढ़): गुरुकुल के उपक्रम में संतगण द्वारा सत्संग के टींबी, नालियेरी मोली, राजुला, अंबाडा, जरगली, ध्राबावड, फाटसर, वाजडी आदि गाँवों में त्रिदिनात्मक कथाएँ आयोजित हुई हैं।



सूरत: यहाँ गुरुकुल में विशेष स्वामिनारायण महामंत्र का होमात्मक अनुष्ठान यज्ञ आयोजित हुआ है, जिसमें सुबह संतगण और पुरुष भक्त एवम् दोपहर के बाद महिलाएँ लाभ ले रहे हैं।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल संचालित सत्संग मंडल के उपक्रम में साधु कृष्णसेवादासजी स्वामी, साधु योगदर्शनदासजी स्वामी एवम् साधु ज्ञानप्रकाशदासजी स्वामी आदि संतजन द्वारा सावन मास में जगह-जगह अलग-अलग बाल-युवा सत्संग मंडलों में झूला उत्सव के साथ त्रिदिनात्मक कथा आयोजित हुई, जिसमें दि.१ से ३, योगी चौक में, दि.५ से ७, वर्णीराज ज़ोन में, दि.१० से १२, सरथाणा ज़ोन में, दि.१५ से १७, भगवती मंडल में, दि.१८ से १९, नाना वराछा में, दि.२५ से २७ धर्मजीवन ज़ोन अश्विनीकुमार में व्याख्यानमालाएँ आयोजित हुईं। इसके अतिरिक्त सोसाइटियों के मंडलों में भी झूला उत्सव के साथ विशेष सभाओं में पूज्य धर्मवल्लभदासजी स्वामी, पूज्य प्रभुचरणदासजी स्वामी आदि संतगण एवम् साधु अचलजीवनदासजी स्वामी आदि युवा विद्वान संत ने पधारकर कथावार्ता का लाभ दिया।

कथापारायण: इसके अतिरिक्त गवैया अक्षरप्रियदासजी स्वामी के वक्तापद पर वेलंजा युवकमंडल द्वारा दि.५ से ९/८ के दौरान पंचदिनात्मक सहजानंद चरित्र रात्रि कथापारायण आयोजित हुआ।

राजकोट गुरुकुल परिवार श्री प्रेमवती महिला संस्कार केंद्र की सेवाप्रवृत्ति



श्री स्वामिनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान के उपक्रम में प्रेमवती महिला संस्कार केंद्र कार्यरत हैं। इन मंडलों में सांख्ययोगी बहनों द्वारा जुलाई-अगस्त २०२६ के दौरान ग्राम्य तथा शहरी क्षेत्रों में हुई सत्संग सेवा प्रवृत्ति निम्नानुसार है।

सत्संग सभा-११ ✲ ज़ोन में झूला उत्सव-१३ ✲ महामंत्र धून-५ घर पर ✲ वर्तमान धारण-१९४ ✲ युवती सभा-२६ ✲ पधरावनी-२४७ ✲ किशोरी सभा-१७ ✲ बालिका सभा-१६९ ✲ महापूजा-३६२ ✲ पूजापेटी-६, महिला सभा-५८, एकादशी सभा-३७ ✲ झूला उत्सव-६७ ✲ कीर्तन भक्ति-२

राजकोट: हरिचरण ज़ोन वाहक-संवाहक मीटिंग, जगन्नाथजी भगवान का षोड्शोपचार पूजन, आध्यात्मिक गोष्ठी नं.७, Young blossom group, घनश्याम महाराज के २०वें पाटोत्सव के अवसरपे जलयात्रा, एकादशी सत्संग सभा और राजकोट, निकोल अमदावाद गुरुकुल सामूहिक झूला उत्सव।

प्रेमवती केंद्र: विदेश सभा-मुक्तमिलन सभा-१, भक्तचिंतामणि यज्ञ-१, फ्रेंडशिप डे सेलिब्रेशन, बालिका ड्रॉइंग कॉम्पिटिशन, महिला झूला उत्सव (धर्मनंदन-धर्मजीवन ज़ोन)।

अक्षरधाम: मंदिर में प्रतिदिन सायं सत्संग सभा, सहजानंदी सखी स्नेहमिलन-१ (महिला, युवती, किशोरी) **मोटावराछा:** स्वामिनारायण महामंत्र धून-२१ घंटे, व्याख्यानमाला-२, फ्रेंडशिप डे सेलिब्रेशन-२, इंडिपेंडेंस पोस्टर कॉम्पिटिशन,

मुंबई (वाशी गुरुकुल): घनसोली से वाशी पदयात्रा-२० महिलाएँ, शास्त्रीजी महाराज की जन्मजयंती के अवसरपे ७ दिन धून, पूर्णिमा के दिन बीजमंत्र याग, गुरुपूर्णिमा उत्सव के अवसरपे महिलाओं द्वारा पू. मोटाबा का पूजन, नीलकंठधाम ३ दिन शिबिर, महिला सभा एवम् विविध आध्यात्मिक गेम का आयोजन ; **जसदण:** बालिकाओं द्वारा मातृवंदना उत्सव, व्याख्यानमाला-१ ; **ऊना:** व्याख्यानमाला-२, ; धोलेरा द्विशताब्दी उत्सव के अवसरपे २०० प्रदक्षिणा, बालिका एन्जॉय डे **सचिन:** हिंडोला उत्सव-७

-संकलित

अक्षरवास सूचना



जूनागढ़: यहाँ स्वा. मंदिर और गुरुकुल संस्था के साथ समर्पित भाव से जुड़े एकांतिक भक्तराज एवम् जूनागढ़ कृषि यूनिवर्सिटी के कलासवन निवृत्त संशोधक ऑफिसर प.भ. श्री कांतिभाई देवजीभाई वेकरिया आयु ७१ वर्ष, दि.१८/८ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। वे पूर्व के कोई योगभ्रष्ट आत्मा होने से राजकोट गुरुकुल में अध्ययन के लिए जुड़ने के बाद बड़े संतगण के योग से उनमें सत्संग के संस्कार उदय हुए।

अध्ययन पूर्ण करके जूनागढ़ कृषि युनिवर्सिटी में संशोधन क्षेत्र में जुड़े और स्थायी हुए। उन्होंने सालों तक मुख्य मंदिर में सुबह जल्दी देवमंदिर में सफाई की सेवा की। काळवा चौक गुरुकुल में भी छोटी-बड़ी सेवा प्रवृत्ति में एवम् निवृत्ति के बाद विशेष जिम्मेदारीपूर्वक सेवा करके सभी की प्रसन्नता प्राप्त की। पूज्यपाद गुरुमहाराज, पूज्य महंत स्वामी, पूज्य ज्ञानस्वरूपदासजी स्वामी एवम् पूज्य भक्तिवल्लभदासजी स्वामी आदि सभी संतगण के प्रति वे आत्मबुद्धि रखते थे। नीति, प्रामाणिकता, कर्तव्यपालन, विनम्रता एवम् सटीकता आदि उनमें निष्ठा से भरे स्वाभाविक गुण थे। इसलिए संपूर्ण यूनिवर्सिटी में भी वे अव्वल नंबर पर रहे। दूसरे भक्तजनों के सत्संग समास के लिए वे हमेशा तन, मन, धन से प्रयत्नशील रहते थे। स्टाफ में भी व्यसन मुक्ति कराते थे।

अंत में अंदाजन एक साल की लंबी बीमारी में भी सतत आत्मभाव से भजन करके श्रीजी संकेत दिखाकर अक्षरवासी हुए।

सुपुत्र घनश्यामभाई एवम् हरिकृष्णभाई आदि यह संपूर्ण वेकरिया परिवार भी संस्था के साथ समर्पित भाव से जुड़ा हुआ है।



नोंघणचोरा: यहाँ प.भ. श्री गोपालभाई माधाभाई वेकरिया आयु ८२ वर्ष, दि.१३/८ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। सुपुत्र प्रवीणभाई एवम् पौत्र भू.वि. पारसभाई गुरुकुल संस्था के साथ समर्पित भाव से और संतगण के साथ आत्मीयता से जुड़े हुए हैं।



शिकागो: अमरिका स्थित गुरुकुल शाखा के साथ समर्पित भाव से जुड़े मूल सणोसरा के प.भ. श्री शिरीषभाई मधुभाई खेरडिया आयु ६८ वर्ष, दि.११/८ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। वे शास्त्रीजी महाराज के कृपापात्र श्री रामजीभाई पीठडिया के दोहित्र थे, गुरुदेव के पास कंठी बाँधी थी। गुरुमहाराज और महंत स्वामी एवम् सभी संतगण के कृपापात्र और भक्तों के आत्मीय भक्तराज थे।



हिंमतनगर: यहाँ मूल अरोडा के एकांतिक भक्तराज मोहनबापा के पौत्र प.भ. हरेशकुमार मणीभाई पटेल आयु ५० वर्ष, दि.२९/७ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। यह संपूर्ण परिवार राजकोट एवम् सूरत गुरुकुल संस्था के साथ समर्पित भाव से एवम् संतगण के साथ आत्मीयता से जुड़ा हुआ है।



रामोद: राजकोट गुरुकुल में समर्पित भाव से जुड़कर नित्य सत्संग मंडल की सेवा करने वाले श्री परेशभाई गजेरा के पिताश्री प.भ. धीरुभाई कानजीभाई गजेरा आयु ७३ वर्ष, दि.३/८ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। वे एक समझदार, विनम्र और उदारदिल, सेवाभावी सद्गृहस्थ थे। सुपुत्र नीतेशभाई एवम् परेशभाई एवम् पौत्र क्रितार्थ आदि...



भावनगर: यहाँ राजकोट गुरुकुल के प्रथम सात भूतपूर्व विद्यार्थियों में से एक प.भ. श्री ईश्वरभाई जयंतीलाल कोठारी आयु ९४ वर्ष, दि.८/८ को हरिस्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए हैं। शामपरा गुरुकुल से पूज्य सुव्रतवल्लभदासजी स्वामी और संतगण ठाकोरजी के साथ उन्हें अंतिम दर्शन देने पधारे थे। वे बहुत दयालु और स्नेहशील सत्संगी थे। सुपुत्र जीतेशभाई एवम् तुषारभाई कोठारी आदि परिवारजनों को...

उपरोक्त सभी अक्षरवासी आत्माओं को श्रीहरि निजचरण सेवा का सुख अर्पित करें एवम् परिवारजनों को धीरज और सत्संग का बल अर्पित करें, ऐसी प्रार्थना।



ज्ञानबाग (जूनागढ़): यहाँ गुरुकुल में १४/७ को शहर के म्यु. कमिश्नर मा. श्री प्रभव जोशी साहब की अध्यक्षता में 'नीलकंठ अचीवमेंट अवॉर्ड समारोह' आयोजित हुआ, जिसमें विविध क्षेत्रों में सिद्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पूज्य संतगण और साहब के हाथों शील्ड अर्पण एवम् प्रेरक प्रवचन द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

संस्था के आगामी आयोजन

५६वीं पारिवारिक सभा: दि.७/९/२०२६, सोमवार अजा एकादशी रात्रि ९:०० बजे राजकोट, सूरत गुरुकुल यूट्यूब चैनल द्वारा ऑनलाइन सत्संग सभा का प्रसारण

पुण्यतिथि: सावन वद-१३, दि.९/९/२६, बुधवार पूज्य कोठारी स्वामी की १२वीं एवम् सावन वद-१४ दि.१०/९ पूज्य जोगी स्वामी की १५वीं पुण्यतिथि पर विशेष गुणानुवाद सभा

गणेश चतुर्थी: भाद्रपद सुद-४, दि.१४/९ सोमवार गुरुकुल शाखाओं में श्रीगणपतिदादा का विधिवत् पूजन, स्थापन उत्सव

श्रीहरिजयंती अभिषेक: दि.२०/९/२६ रविवार, राजकोट और सूरत गुरुकुल में पदयात्रा के साथ स्वयम् अपने हाथों दूध से अभिषेक

जलझीलणी एकादशी: दि.२२/९/२६ मंगलवार, ठाकोरजी को जलविहार धून-संकीर्तन के साथ रासोत्सव, प्रसाद वितरण

मेलबोर्न सत्संग विचरण: १८/९ से ६/१०, २०२६ पूज्य गुरुमहाराज एवम् पूर्णप्रकाशदास स्वामी आदि संत। १८ दिन

व्रत-उत्सव: सं. २०८२ सावन-भाद्रपद, सितंबर - २०२६

दि.	वार	तिथि	विवरण
०४	शुक्र	०८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, उपवास
०७	सोम	११	अजा एकादशी उपवास,
११	शुक्र	३०	अमावस्या, शिवपूजन समाप्त
१२	शनि	०१	भादरवा मास प्रारंभ
१४	सोम	०४	गणेशचतुर्थी, सामसावनी, केवड़ात्रीज सामवेदी ब्राह्मणों को जनेऊ बदलनी
१५	मंगल	०५	ऋषिपंचमी, बहनों को व्रत करना
२०	रवि	०९	श्रीहरि जयंती, उपवास
२२	मंगल	११	जलझीलणी एकादशी, उपवास
२३	बुध	१२	वामनजयंती, मध्याह्न में आरती-पारणा
२५	शुक्र	१४	गणेश विसर्जन, अनंत चतुर्दशी
२६	शनि	१५	मुकुटोत्सव पूनम
२७	रवि	०१	श्राद्ध प्रारंभ, एकम का श्राद्ध

गुरुकुल गौरव: बाल हास्यकार-साहित्यकार विद्यार्थी



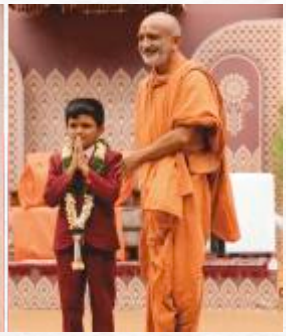


बाल कलाकार: सिद्धराज सिंधव

वर्तमान में राजकोट गुरुकुल प्राथमिक शाला में गुजराती माध्यम में कक्षा ८ में अध्ययन कर रहे श्री सिद्धराज पंकजभाई सिंधव इस समय एक बाल हास्यकार और साहित्यकार के रूप में टीवी चैनलों और सामाजिक क्षेत्र में ख्याति रखते हैं। पेट पकड़कर हँसा सकते हैं, तो विचार करने पर मजबूर कर दें ऐसी लोक संस्कृति की बातें भी करना जानते हैं।

दूसरी कक्षा से उन्होंने कथापारायणों और प्रसंगों में ४०० से अधिक छोटे-बड़े सफल कार्यक्रम किए हैं। इसके बावजूद अध्ययन में वे हमेशा स्कूल फर्स्ट ही रहते हैं। उसके पीछे उनके माता-पिता की मेहनत और परिवार के संस्कार हैं। सबसे विशेष तो उन्होंने पूज्य गुरुमहाराज को आदर्श रखकर उनकी आज्ञा से घर में टीवी नहीं रखा है और मोबाइल भी नहीं चलाते। उसके साथ इस समय उन्होंने कलेक्टर बनने के लिए पूर्व तैयारी भी आरंभ कर दी है।





बाल स्पीकर: रुद्र हिरपरा

वर्तमान में राजकोट गुरुकुल प्राथमिक शाला अंग्रेजी माध्यम में कक्षा ६ में अध्ययन कर रहे श्री रुद्र चिरागभाई हिरपरा भी इस समय जैसे एक बाल मोटिवेशनल स्पीकर हों, इस तरह सार्वजनिक क्षेत्रों में ख्याति रखते हैं। मन खोलकर और हृदय खोलकर किसी भी बात को प्रस्तुत करने की उनमें स्वाभाविक कला है।

उन्होंने भी अनेक कथापारायणों और प्रासंगिक सभाओं में बाल हृदय के निखालस भाव से हास्य वार्ता एवम् प्रेरक कथा प्रसंग (मोरल स्टोरी) वर्णित करके पूज्यपाद गुरुमहाराज और संप्रदाय के संतजन एवम् हरिभक्तों के आशीर्वाद प्राप्त किए हैं।

इन दोनों विद्यार्थियों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् मा. मुख्यमंत्रीश्री की उपस्थिति में भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत करके उनकी प्रसन्नता और आशीर्वाद प्राप्त किए हैं।


१


२


३


४


५


६


७

१. वडोदरा: गुरुकुल में गुरुपूर्णिमा पर्व पर विशाल पुष्पहार से ठाकोरजी के साथ संतगण का भावपूजन कर रहे विद्यार्थी **२. टींबी (ऊना):** स्वा. मंदिर में व्याख्यानमाला के प्रसंग पर सत्संगकथा करते साधु कृष्णसेवादासजी स्वामी और ऊना गुरुकुल के संतजन **३. जसदण:** स्वा. मंदिर द्वारा सावन मास में अलग-अलग भक्तजनों के घर आयोजित होते जलाभिषेक द्वारा स्वामिनारायण महामंत्र का अनुष्ठान करते संत एवम् भक्तजन **४. राजकोट:** चातुर्मास में संतगण से प्रेरणा लेकर धारणा-पारणा आदि तपव्रत करते विद्यार्थियों को पारणा के अवसरपे प्रसादी अर्पण करते पूज्यपाद गुरुमहाराज **५. सूरत:** गुरुकुल में गुरुपूर्णिमा पूजन पर्व पर सभा में भक्तजनों को आशीर्वचन देते पूज्यपाद धर्मवल्लभदासजी स्वामी और संतगण **६. रजाईना (कनाडा):** गुरुकुल में सत्संग पर्व में कथावार्ता करते शास्त्री कृष्णचरणदासजी स्वामी एवम् श्रवण करते भक्तजन **७. नीलकंठधाम:** श्रीवर्णीन्द्र प्रभु के सान्निध्य में संस्कृत गुरुकुल में अध्ययन कर रहे ब्राह्मण बटुकों को संतगण द्वारा यज्ञोपवीत संस्कारविधि

RNI No. 11170/57 GUJGUJ/05053 Permitted to Post at Rajkot RMS on 2nd date of every month under RNP No. Rajkot-096/2024-26 Licensed to post without pre-payment NO. G-PMG-RJT/009/2026 Valid up to 31-12-2026



१ २





३ ४





फोर कलर जाहेरात









सं. २०८३ नूतन साल कैलेंडर प्रकाशन विज्ञापन के संबंध में....
श्रीजी स्टोर द्वारा श्रीघनश्याम महाराज, श्रीसिद्धेश्वर महादेव, श्रीकष्टभंजन देव, इन चार स्वरूपों में विज्ञापन के लिए संपर्क...
मो. नं. ९९२५५ ००२५३, ७३५९२ १२५४८

५

१. जूनागढ़: मुख्य मंदिर में श्रीराधारमण देव के सान्निध्य में वड़ताल श्री लक्ष्मीनारायण देव गादी पीठाधिपति परमपूज्य आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराज के षष्ठीपूर्ति प्रसंग पर गुरुकुल परिवार की ओर से भावपूजन करते संत **२. निकोल (अमदावाद):** शिवप्रतिष्ठा प्रसंग पर अभिषेक करते जगन्नाथ मंदिर के महंत श्री दिलीपदासजी महाराज आदि संत **३. डलास (अमरिका):** गुरुकुल में १५ अगस्त को भारतीय ध्वज लहराकर ध्वजवंदन करते संत-भक्त एवम् बच्चे **४. आंध्रप्रदेश:** सरकारश्री द्वारा विशाखापटनम में गुरुकुल शाखा के लिए नोवोटेल में आयोजित BRICS मंत्री स्तरीय बैठक के निर्णय अनुसार आधिकारिक रूप से गुरुकुल संस्था को लिखित मंजूरी करार पत्र अर्पण करते मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडूजी एवम् शास्त्री शुकवल्लभदासजी स्वामी आदि संत

सद्विद्या

SADVIDYA(MONTHLY)

Editor, Publisher, Printer:
Sadhu Rasikvallabhdasji Swami
Owner: Shree Swaminarayan Gurukul
Place of Publication: Swaminarayan Gurukul, Dhebar Road, Rajkot-360002, Gujarat, INDIA

वोट्सएप संपर्क नं. 99255 00253, 99798 59871

Please provide your valuable
feedback

